पश्चिम मध्य रेलवे
मुख्यालय, जबलपुर

राजभाषा सरिता

जो बात हिंदी में है
वो किसी और में नहीं

वर्ष – 2025 अंक – 52 अक्टूबर – दिसंबर

संपादकीय

संपादक की कलम से ....

पश्चिम मध्य रेलवे, मुख्यालय, राजभाषा विभाग की गृह पत्रिका " राजभाषा सरिता" का 52 वां अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। मुझे अत्यंत हर्ष है कि " राजभाषा सरिता" का प्रत्येक अंक निखरता हुआ नियमित रूप से हमारे रेल परिवार के सदस्यों तक पहुँच रहा है। पिछले अंक के मनमोहक कलेवर तथा इसमें प्रकाशित सामग्री के संबंध में हमें पाठकों से काफी सराहना मिली है। हमारा सदैव प्रयास रहा है कि "राजभाषा सरिता" का प्रत्येक अंक हमारे सुधी पाठकों की अपेक्षाओं व आकांक्षाओं पर खरा उतरें।

हमें अत्यधिक प्रसन्नता है कि हमारी यह पत्रिका अपने उद्देश्यों के अनुरूप रेल अधिकारियों, कर्मचारियों तथा उनके परिवार के सदस्यों के बीच सृजनात्मक वातावरण निर्मित करने में सफल रही है । इसके प्रत्येक अंक में कुछ नए रचनाकारों का जुड़ते जाना इस बात का परिचायक है ।

माननीय रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव के कर कमलों से 69 वें 'अति विशिष्ठ रेल सेवा पुरस्कार वितरण समारोह 2024' के अवसर पर पश्चिम मध्य रेलवे को उत्कृष्ट प्रदर्शन हेतु 'लेखा एवं वित्त प्रबंधन' और 'कार्मिक प्रबंधन शील्ड' प्रदान की गई है। यह हमारी महाप्रबंधक महोदया श्रीमती शोभना बंदोपाध्याय जी के कुशल नेतृत्व एवं सभी के अथक परिश्रम का सुपरिणाम है। यह अटल सत्य है कि कुशल नेतृत्व के बिना किसी भी संगठन का संचालन एवं सफल होना असंभव माना जाता है इसके लिए हम सदैव आपके आभारी हैं।

राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में हमने लगातार प्रगति की है । पिछले वर्ष जहां हमें आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी चल वैजयंती, रेल यात्रा वृतांत पुरस्कार, रेलवे बोर्ड के व्यक्तिगत नकद पुरस्कार, अखिल रेल नाट्योत्सव पुरस्कार तथा रेल मंत्री राजभाषा रजत पदक इस प्रकार कुल 05 पुरस्कार प्राप्त हुए। वहीं इस वर्ष हमें कमलापति त्रिपाठी राजभाषा स्वर्ण पदक, रेल मंत्री राजभाषा रजत पदक तथा लाल बहादुर शास्त्री तकनीकी मौलिक पुस्तक लेखन पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। इसके आलावा हमारे अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने रेल मंत्री निबंध प्रतियोगिता, प्रेमचंद पुरस्कार योजना, अखिल रेल हिंदी प्रतियोगिता में पुरस्कार प्राप्त कर फिर से हमारा गौरव बढ़ाया है। साथ ही हमारे 01 अधिकारी एवं 03 कर्मचारियों को रेलवे बोर्ड की व्यक्तिगत पुरस्कार योजना के अंतर्गत भी सम्मानित किया गया है। ये सफलताएँ हमारे अधिकारियों तथा कर्मचारियों की राजभाषा हिंदी के प्रति गहरी निष्ठा, उत्कृष्ट कार्यक्षमता एवं निरंतर परिश्रम का सुपरिणाम है, इन उपलब्धियों के लिए आप सभी बधाई के पात्र हैं ।

इस अंक में शामिल रचनाओं के बारे में अपने विचारों से हमें अवश्य अवगत कराएँ । इससे रचनाकारों का मनोबल बढ़ेगा और पत्रिका को और बेहतर बनाने में हमें मदद मिलेगी ।

(संतलाल मर्सकोले)
राजभाषा अधिकारी
मुख्यालय/जबलपुर

राजभाषा सरिता

अंक - 52 | वर्ष - 2024 | अक्टूबर - दिसम्बर

संरक्षक
श्रीमती शोभना बंदोपाध्याय
महाप्रबंधक

मार्गदर्शक
मनोज कुमार गुप्ता
मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं
प्रमुख मुख्य सामग्री प्रबंधक

परामर्श
प्रज्ञेश निंबालकर
उप मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं
उप मुख्य संरक्षा अधि. (यांत्रिक)

संपादक
संतलाल मर्सकोले
राजभाषा अधिकारी

कार्यकारी संपादक
राकेश कुमार मालवीय
वरिष्ठ अनुवादक

सहयोग
राजभाषा विभाग

पत्राचार का पता
संपादक
राजभाषा सरिता
महाप्रबंधक कार्यालय, राजभाषा विभाग
पश्चिम मध्य रेलवे, इंदिरा मार्केट
जबलपुर (म.प्र.)-482 001
मोबाइल : 97524 15614, 77010 82680
e-mail: rajbhashawcrhq@gmail.com

• सीमित संख्या में निःशुल्क वितरण के लिए
• पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं ।

अनुक्रमणिका

क्र.	शीर्षक	पृष्ठ
1.	रेल संचालन–भाप इंजन से वंदे भारत तक (पुरस्कृत निबंध)	3
2.	हिंदी साहित्य में जीवन दर्शन (लेख)	7
3.	वो जमीं से जुड़ा इंसान (कविता)	9
4.	लेखन का आनंद – डिजिटल युग में पत्रों का महत्व (लेख)	10
5.	मोबाइल और शनि की साढ़े साती (व्यंग्य)	12
6.	आधार, अंधेर और अधर में लटका गोबर (लेख)	13
7.	साइबर अपराध (लेख)	17
8.	जीवन झरने जैसा पानी (कविता)	19
9.	मुझे वापस जाना था (लेख)	20
10.	देखा है आपको (गजल)	23
11.	गजल	23
12.	नव वर्ष (लेख)	24
13.	भारतीय संस्कृति की अनूँठी मिशाल है हिंदी (कविता)	25
14.	पैरों के छाले (कहानी)	26
15.	राष्ट्रीय ध्वज के निर्माण की कहानी (लेख)	27
16.	समय की मांग है अपने को अपडेट रखें (लेख)	28
17.	नया बरस – (कविता)	29
18.	रेल नियम – (कविता)	29
19.	भारतीय रेल : परिवहन व्यवस्था का मेरूदण्ड (पुरस्कृत निबंध)	30
20.	होली गीत: उमर बराबर तोरी मोरी...	31
21.	हिंदी (कविता)	31
22.	राजभाषा वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तरी	32
23.	छायाचित्र वीथिका	39

**हिंदी से किसी भी भारतीय भाषा को भय नहीं है
यह सबकी सहोदरा है - महादेवी वर्मा**

गौरव के पल

69 वां अति विशिष्ट रेल सेवा पुरस्कार वितरण समारोह - 2024

'लेखा एवं वित्त प्रबंधन' शील्ड

'कार्मिक प्रबंधन' शील्ड

निबंध

रेल संचालन: भाप इंजन से वंदे भारत तक

(रेल मंत्री हिंदी निबंध प्रतियोगिता वर्ष 2023-24' में राजपत्रित वर्ग में द्वितीय पुरस्कार से पुरस्कृत निबंध)

कहते हैं कि "सोचना आसान है, कार्य करना कठिन है,परन्तु जहाँ चाह है, वहाँ राह है'' भारतीय रेल ने भाप इंजन के युग से शुरू हुए रेल संचालन के सफर को नए भारत के सामर्थ के प्रतीक 'वंदे भारत' तक की चुनौती को स्वीकार किया है अपने गठन से 170 वर्षों की विकास यात्रा की साक्षी रही भारतीय रेल वर्तमान में रेल यात्रियों की सुविधा, ट्रेन की गति एवं चुनौती पूर्ण रेल मार्गों के निर्माण क्षेत्र में निरंतर गुणात्मक सुधार करते हुए रेल संचालन को नया आयाम प्रदान कर रही है। जल्द ही मेट्रो रेलवे, कोलकाता के ईस्ट-वेस्ट मेट्रो कॉरिडोर परियोजना में भारत की पहली अंडरवाटर मेट्रो सेवा पूरी होने की संभावना है जिसमें हुगली नदी के नीचे ट्रेनों का संचालन होगा जिससे पानी के नीचे यह उत्कृष्ट इंजीनियरिंग का सपना साकार होगा।

भाप इंजन से वंदे भारत तक के सफर में रेल संचालन में हुए परिवर्तन की आधारशिला प्रौद्योगिकी है। प्रौद्योगिकी ने भारतीय रेल के हर क्षेत्र में दक्षता और उत्पादन को बढ़ाकर प्रगति का मार्ग प्रशस्त किया है। भारतीय रेल ने स्वदेशी रूप से 'हाइपरलूप' प्रौद्योगिकी आधारित परिवहन प्रणाली विकसित करने के लिए आई आई टी मद्रास से हाथ मिलाया है, जो बुलेट ट्रेनों की तुलना में और तेजी से चलती है तथा इसकी परिचालन लागत एवं कार्बन उत्सर्जन काफी कम है। इस निबंध में भारतीय रेलवे के विभिन्न क्षेत्रों जैसे रेल परिवहन, यात्री सुविधाओं, सूचना प्रौद्योगिकी, वहन क्षमता, स्टेशन पुनर्विकास योजना, अवसंरचना विकास, परिचालन दक्षता, सुरक्षा, पर्यावरण आदि में हुए परिवर्तन पर निम्नानुसार प्रकाश डाला गया है :-

1. रेल परिवहन:-रेल संचालन की प्राथमिकता रेल परिवहन है। इसमें दर्ज गुणात्मक परिवर्तन निम्न हैं :-

- **गति-शक्ति कार्गो टर्मिनल:** रेल कार्गो को संभालने के लिए अतिरिक्त टर्मिनलों के विकास में उद्योग से निवेश बढ़ाने के लिए 'गति शक्ति मल्टी-मॉडल कार्गो टर्मिनल (जीसीटी)' नीति प्रारंभ की गई है और आगामी तीन वर्षों में 100 जीसीटी स्थापित करने का लक्ष्य रखा गया है।
- **स्वचालित ब्लाक सिगनलिंग (एबीएस):** भारतीय रेल के मौजूदा उच्च घनत्व या यातायात वाले मार्गों पर और अधिक रेलगाडियां चलाने के लिए लाइन क्षमता बढ़ाने हेतु 'स्वचालित ब्लॉक सिगनलिंग' एक लागत प्रभावी समाधान या व्यवस्था है। भारतीय रेलवे ने 2021-22 के 218 किलोमीटर की तुलना में 2022-23 के दौरान स्वचालित सिगनलिंग से 530 किलोमीटर का उन्नयन किया है, जिसमें 143.12% की वृद्धि हुई है। ये भारतीय रेलवे के इतिहास में स्वचालित सिगनलिंग में हासिल किए गए सर्वश्रेष्ठ आंकड़ें भी हैं।
- **भारत गौरव पर्यटन ट्रेनें :** "देखो अपना देश" और "एक भारत श्रेष्ठ भारत" की अवधारणाओं को बढ़ावा देने के उद्देश्य से इन ट्रेनों का संचालन शुरू किया गया है। इन थीम-आधारित ट्रेनों की परिकल्पना घरेलू पर्यटकों के साथ-साथ अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों को भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत से अवगत कराने हेतु की गई है।
- **अमृत भारत ट्रेन:** ये सुपरफास्ट, गैर वातानुकूलित डिब्बों वाली एल.एच.बी. ट्रेनें गरीबों की सेवा भावना से प्रारंभ की गई हैं। बेहतर यात्री सुविधाओं से सुसज्जित इस ट्रेन के दोनों छोर पर इंजन हैं।
- **अंत्योदय, हमसफर एवं उदय रेलगाड़ियाँ :** अंत्योदय अनारक्षित सुपरफास्ट सेवा, हमसफर पूरी तरह से 3 एसी रेलगाड़ी एवं उदय डबल-डेकर प्रकार की रेलगाड़ियों से रेल संचालन के आयाम बदल रहे हैं।
- **तेजस रेलगाड़ी :** 130 कि.मी. प्रति घंटा की गति की इस रेलगाड़ी का शुभारंभ किया जा चुका है।

2. संचालन संबंधित यात्री सुविधाएँ :- यात्रीगण की अपेक्षा है कि रेलवे द्वारा उपलब्ध कराई गई संचालन संबंधित जनोपयोगी सुविधा में न केवल स्पष्टता और गुणवत्ता हो बल्कि उसमें प्रभावशाली सुधार भी हो। यात्रियों की अपेक्षाओं के मद्देनजर भारतीय रेल द्वारा उपलब्ध कराई गई विश्व स्तरीय संचालन संबंधित यात्री सुविधाएँ इस प्रकार हैं :-

- **वातानुकूलित 3-टीयर इकोनॉमी कोच**- भारतीय रेल में आधुनिक यात्री सुविधायुक्त ये कोच शामिल हुए हैं, 3 ए. सी. कोच की 72 बर्थ की तुलना में नए वातानुकूलित 3 टीयर इकोनॉमी कोच, में 83 बर्थ हैं ये अधिक सुरक्षित हैं, इसके साथ ही 8% कम किराया भी है।
- काशी तमिल संगम मरूकाशी और तमिलनाडु के बीच सदियों पुराने ज्ञान एवं प्राचीन सभ्यता गत जुड़ाव को फिर से तलाशने के लिए नवंबर-दिसंबर 2022 में वाराणसी में इस कार्यक्रम का

आयोजन 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' की भावना के अनुरूप किया गया। इस कार्यक्रम के दौरान भारतीय रेल ने यात्रियों की सुविधा हेतु तमिलनाडु से काशी के लिए अनेक ट्रेन–सेवाएं संचालित की हैं।

• **विस्टाडोम कोचः** मोड़, सुरंगों और पुलों से युक्त पर्वतीय रेलमार्ग के यात्रा अनुभवों को अविस्मरणीय बनाने एवं पर्यटन को बढ़ावा देन हेतु समग्र–श्यक प्रणाली युक्त विस्टाडोम कोच उपयोग में लाये जा रहे हैं।

• **ट्विटर, सी पी ग्राम :** इन सोशल नेटवर्किंग साइट्स के जरिये रेल संचालन के दौरान यात्रीगण शिकायत/ सुझाव दे सकते हैं जिनका त्वरित निवारण किया जाता है ।

• **हेल्पलाइन नंबर 139:** भारतीय रेल ने समस्त हेल्पलाइन नम्बरों का केंद्रीयकृत हेल्पलाइन नंबर 139 बनाया है ताकि रेल संचालन के दौरान यात्रियों द्वारा की जाने वाली शिकायतों का त्वरित निवारण संभव हो सके।

3. सूचना प्रौद्योगिकी:–गत वर्षों में सूचना प्रौद्योगिकी ने मानव सभ्यता को आमूलचूल बदलकर एक नए युग में लाकर खड़ा कर दिया है। परिवर्तन प्रवाह में विश्व के पाँच सबसे बड़े यात्री रेल तंत्रों में से एक भारतीय रेल ने भी संसार के साथ कदमताल कर निम्न सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में परिवर्तन कर रेल–संचालन को सुलभ बनाया है

• **कंप्यूटरीकृत पार्सल प्रबंधन प्रणाली :** पार्सल यातायात को ट्रैक करने के लिए इस प्रणाली की शुरुआत की गई है जिसका प्रमुख उद्देश्य पार्सल यातायात में वृद्धि करके पार्सल आय को बढ़ाना एवं ग्राहकों को परिवहन के दौरान पार्सलों की वर्तमान स्थिति की सटीक जानकारी प्रदान करना है ।

• **रियल टाइम सूचना प्रणाली (आर.टी.आई.एस.):** इस प्रणाली को अनेक रेल इंजनों में लागू करने से जीपीएस उपकरण 'उपग्रह संचार' का उपयोग कर ट्रेनों की रियल टाइम ट्रैकिंग करते हैं जिससे रेल संचालन की वास्तविक जानकारी मिलती है।

• **नेक्स्ट जनरेशन ई–टिकटिंग:** भारतीय रेल ने बढ़े हुए कार्यभार को सँभालने के लिए नेक्स्ट जनरेशन ई–टिकटिंग सिस्टम की क्षमता को वर्ष 2014 में 7,200 टिकट प्रति मिनट से बढ़ाकर अब 25,000 टिकट प्रति मिनट से अधिक कर दी है।

• **ई–केटरिंग:** इसके अंतर्गत अनेक ट्रेनों में एस.एम.एस.या संबंधित नंबर पर काल करके ऑन–बोर्ड खाना उपलब्ध कराया जा रहा है हाल ही में रेल यात्रियों के लिए भोजन आर्डर करने के लिए एक व्हाट्सएप नंबर आरंभ किया गया है।

• **मोबाइल फोन के माध्यम से पेपरलेस अनारक्षित टिकट :** अनारक्षित डिब्बों में यात्रा करने के लिए अनेक यात्री अब टिकट लाइन में खड़े होने की अपेक्षा मोबाइल फोनों पर यूटीएस एप से टिकट प्राप्त कर रहे हैं।

4. रेल संचालन में वहन क्षमता :– विगत वर्षों के दौरान मालभाड़ा तथा यात्रीभाड़ा का असंतुलन धीरे–धीरे बढ़ने से भारतीय रेल मालवाहक सेवाओं को दुनिया की सबसे महंगी रेल सेवाओं में से एक बना दिया है। अतः रेल संचालन में वहन अवसंरचना में गुणात्मक परिवर्तन हेतु निम्न कदम उठाये गए हैं:–

• **डबल स्टैकाड्वार्फ कंटेनर :** कुछ समय पूर्व भारतीय रेल ने यह कंटेनर प्रारंभ किये हैं जिनमें सामान्य कंटेनरों की तुलना में 67% ज्यादा सामान आ सकता है।

• **डेडिकेटेड फ्रेट कारिडोर:** मालगाड़ियों के लिए समर्पित पूर्वी और पश्चिमी दोनों "डेडिकेटेड फ्रेट कारिडोर" चालू किये जाने के पथ पर अग्रसर हैं जिससे मालगाड़ियों के संचालन में वृद्धि होगी एवं समय की बचत होगी।

• **रोलऑन–रोलऑफ (रो–रो) सेवा :** यह सेवा विभिन्न वस्तुओं से भरे सड़क वाहनों को खुले समतल रेलवे वैगनों पर ले जाने की अवधारणा है जो मल्टीमॉडल कनेक्टिविटी पर आधारित है एवं घर–घर सेवाएं प्रदान करती है। यह सेवा लम्बी दूरी की ट्रक ड्राइविंग एवं कीमती ईंधन को बचाती है।

5. संरक्षा:–भारतीय रेल द्वारा संरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाती है। संरक्षा को बेहतर करने के लिए हर संभव कदम उठाये जा रहे हैं। रेलवे की चल–अचल परिसम्पतियों के नवीनीकरण, प्रति स्थापन, सुरक्षा सुधार कार्यों के लिए निरंतर कार्यवाही की जा रही है। संरक्षा में निम्न क्षेत्रों में अभूतपूर्व परिवर्तन हुए हैं :–

• **कवच:** यह एक स्वदेशी रूप से विकसित आधुनिक इलेक्ट्रानिक प्रणाली है। भारतीय रेल में ट्रेन संचालन में सुरक्षा के लिए चयनित रेल मार्गों पर इसको क्रियान्वित किया जा रहा है। 'कवच' प्रणाली का मुख्य कार्य ट्रेनों को खतरे के सिगनल पार

करने और आमने-सामने की टक्कर से सुरक्षा प्रदान करने के लिए है।

• **एलएचबी कोच:** भारतीय रेल वर्तमान में पारंपरिक कोचों का निर्माण बंद कर कम लागत वाले, अधिक सुरक्षित और अधिक गति के एलएचबी कोचों के साथ रेल यात्रा सुनिश्चित कर रही है।

• **फाग-पास डिवाइस:** कोहरे के समय गति एवं सुरक्षित ढंग से ट्रेन संचालन के लिए लोको पायलटों को ग्लोबल पोजिशनिंग सिस्टम (जी.पी.एस.) पर आधारित हैण्ड-हेल्ड पोर्टेबल उपकरण 'फाग-पास डिवाइस' दिया गया है।

6. सुरक्षा:-भारतीय रेल में प्रतिदिन दो करोड़ से ज्यादा यात्री सफर करते हैं। भारतीय रेल विशेषकर महिला यात्रियों की यात्रा को अधिक से अधिक सुरक्षित बनाने के लिए नवीनतम प्रौद्योगिकी को अपना रही है जो इस प्रकार हैं:-

• **ट्विटर, फेसबुक:** यत्रियों की सुरक्षा बढ़ाने और उनकी सुरक्षा से संबंधित समस्याओं के समाधान हेतु रेलें ट्विटर, फेसबुक सहित विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफार्मों के जरिए महिलाओं एवं यात्रियों के साथ नियमित संपर्क में रहती हैं।

• **आपातकालीन टॉक बैक प्रणाली:** सभी नव-निर्मित इलेक्ट्रिकल मल्टीपल यूनिट (ईएमयू) और कोलकाता मेट्रो के वातानुकूलित रेकों के महिला कंपार्टमेंटों/ सवारी डिब्बों में यह प्रणाली मुहैया कराई गई है।

• **सीसीटीवी कैमरा:** सुरक्षा बढ़ाने के लिए रेल डिब्बों और स्टेशनों पर सीसीटीवी कैमरे लगाए जा रहे हैं जिससे विशेष कर महिलाएं एवं वरिष्ठ नागरिक लाभान्वित होंगे।

• **मेरी सहेली:** ट्रेनों से अकेले यात्रा करने वाली महिला यात्रियों की पूरी यात्रा के दौरान बढ़ी हुई और बेहतर सुरक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से एक पहल "मेरी सहेली" भी जारी है। प्रशिक्षित महिला अधिकारियों और कर्मियों की टीमें महिला आरपीएफ कर्मियों की तैनाती के साथ कार्यरत हैं।

7. अमृत भारत स्टेशन एवं स्टेशन पुनर्विकास योजनाएँ:-

• **अमृत भारत स्टेशन योजना :** इसके अंतर्गत स्टेशनों के आधुनिकीकरण के लिए निरंतर स्टेशनों के विकास की परिकल्पना की गई है। यह योजना मुख्य रूप से सुरक्षित, आरामदायक और स्वच्छ रेलवे परिसरों को उपलब्ध कराने पर केंद्रित है । इस योजना के तहत प्रथम चरण में चुने गए 508 स्टेशनों में प्रमुख शहरों, पर्यटन और तीर्थ यात्रा महत्व के स्थानों पर स्थित स्टेशन शामिल हैं।

• **स्टेशन पुनर्विकास योजना:** वर्तमान में यात्रियों को आधुनिक सुविधाएं प्रदान करने के लिए देश भर के प्रमुख स्टेशनों का पुनर्विकास किया जा रहा है। इसके फलस्वरूप रोजगार में वृद्धि और बेहतर आर्थिक विकास जैसे कई सकारात्मक प्रभाव पड़ेंगे। तीन रेलवे स्टेशनों अर्थात गांधीनगर कैपिटल, रानी कमलापति और सर एम. विश्वेश्वरैया टर्मिनल का पुनर्विकास कर दिया गया है। गांधीनगर कैपिटल स्टेशन के ऊपर होटल भी बनाया गया है, रानी कमलापति रेलवे स्टेशन देश का पहला आईएसओ -सर्टिफाइड एवं पहला पीपीपी-मॉडल आधारित रेलवे स्टेशन है तथा सर एम. विश्वेश्वरैया टर्मिनल स्टेशन देश का पहला सेंट्रलाइज्ड एयर कंडीशनर रेलवे स्टेशन है।

8. परिचालन दक्षता एवं अवसंरचना विकास:- भारतीय रेल ने परिचालन दक्षता और रेल अवसंरचना के विकास के लिए निम्न महत्वपूर्ण कदम उठाये हैं:-

• **गति अपग्रेडेशन:** दिल्ली-हावड़ा और दिल्ली-मुंबई मार्गों का 160 किमी प्रति घंटा तक गति अपग्रेडेशन का कार्य एवं स्वर्णिम चतुर्भुज-स्वर्णिम विकर्ण (जीक्य/जीडी) मार्गों पर 130 किमी प्रति घंटा तक गति अपग्रेडेशन का कार्य प्रगतिशील है।

• **सुपर वासुकी:** दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे द्वारा अगस्त 2022 में देश की सबसे लंबी 3.5 किमी लोडेड मालगाड़ी 'सुपर वासुकी' का परिचालन किया गया। इस तरह की लान्ग-हालट्रेन से क्रू-स्टाफ की बचत, कम परिचालन समय के साथ-साथ रेल पथ का अधिकाधिक उपयोग होता है ।

• **ऊधमपुर-श्रीनगर-बारामूला रेल परियोजना :** इस परियोजना का उद्देश्य ब्राड-गेज रेल-लाइन से कश्मीर क्षेत्र को देश के बाकी हिस्सों से जोड़ना है । इस परियोजना का अधिकांश हिस्सा ट्रेन संचालन के लिए चालू हो चुका है और कटरा-बनिहाल के बीच 111 किमी के खंड पर काम चल रहा है। अपने भू-भाग और गहरी घाटियों से भरी नदियों की विस्तृत व्यवस्था के कारण यह सबसे कठिन हिस्सा है। इस खंड में कई उत्कृष्ट पुल और सुरंगें बन रही हैं।

9. वंदे भारत एक्सप्रेस :- वंदे भारत एक्सप्रेस आधुनिक भारत की गति और भव्यता का प्रतिबिंब है। भारतीय रेल स्वदेशी निर्मित सेमी-हाईस्पीड ट्रेन वंदेभारत एक्सप्रेस के माध्यम से देश के हर क्षेत्र को जोड़ने के लक्ष्य की ओर अग्रसर है।

• **वंदे भारत एक्सप्रेस:** फरवरी 2019 में नई दिल्ली से वाराणसी के बीच पहली वंदे भारत एक्सप्रेस को प्रारंभ किया गया था। तीन वर्षों में 400 वंदेभारत ट्रेन **'मेक इन इंडिया'** के तहत निर्मित करने की योजना रखी गई है।

• **वर्जन-2 वंदेभारत एक्सप्रेस:** वर्जन-2 वंदे भारत एक्सप्रेस को गांधीनगर कैपिटल से मुंबई सेंट्रल के लिए 30 सितम्बर, 2022 को रवाना किया गया जिसमें निम्न विशेषताएँ हैं- पहले ट्रेन को 160 किमी प्रति घंटे की गति तक पहुँचने में 145 सेकंड का समय लगता था। अब यह 140 सेकंड में पहुँच जाएगी। यह एक बेहतर कोच नियंत्रण प्रबंधन प्रणाली है।

10. पर्यावरण:- भारतीय रेल विश्व की सबसे बड़ी हरित रेलवे बनने का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए मिशन मोड में कार्य कर रही है और वर्ष 2030 तक **"शून्य कार्बन उत्सर्जक"** बनने के पथ पर अग्रसर है। रेल-संचालन में कार्बन प्रभाव को कम करने हेतु किये गए महत्वपूर्ण उपाय निम्नानुसार हैं:-

• **हेड ऑनजनरेशन (एचओजी) प्रणाली:** आत्मनिर्भरता की दिशा में एल.एच.बी. रेलडिब्बों को घरेलू स्तर पर "हेड ऑन जनरेशन" प्रणाली में बदला जा रहा है जिसमें सवारी डिब्बों में वातानुकूलन, प्रकाश व्यवस्था, पंखे आदि के लिए बिजली इंजन को शिरोपरि उपस्कर (ओ.एच.ई.) से बिजली आपूर्ति की जाती है। इससे पॉवर कारों से छुटकारा मिलता है और जेनरेटर में खपत होने वाले बहुमूल्य डीजल की बचत होने के साथ वायु-प्रदूषण भी कम होता है।

• **कर्षण के लिए सौर ऊर्जा:** सौर ऊर्जा एक गैर प्रदूषणकारी और कम ऊर्जा लागत स्रोत है। कर्षण के लिए सौर ऊर्जा का उपयोग करने के लिए पश्चिम मध्य रेल के बीना में 1.7 मेगावाट की एक परियोजना पहले ही स्थापित की जा चुकी है। यह विश्व में अपनी तरह की सर्वप्रथम सौर ऊर्जा परियोजना है, जो 25 किलोवोल्ट पर सीधे कर्षण प्रणाली में सौर विद्युत शक्ति की पूर्ति कर रही है।

• **रेल-विद्युतीकरण :** वर्ष 2023 तक पूरी बड़ी-लाइन (बीजी) के नेटवर्क के शत-प्रतिशत विद्युतीकरण का लक्ष्य निर्धारित किया गया है जिससे रेल को कार्बन रहित बनाने की पहल को बढ़ावा मिलेगा। रेल-विद्युतीकरण से "आयातित डीजल" पर निर्भरता कम होने से राजस्व बचता है। भारतीय रेलवे के इतिहास में 2022-23 के दौरान 6,542 आरकेएम का रिकार्ड विद्युतीकरण किया गया है।

अंत में कहना उचित होगा कि भाप इंजन के युग से वंदे भारत तक की यात्रा में भारतीय रेल अब निरंतर तीव्र, स्वच्छ और आधुनिकतम बन रही है। भारतीय रेल ने जटिल कोंकण, दुर्गम पूर्वोत्तर और सामरिक महत्व की कश्मीर घाटी को रेल-नेटवर्क के माध्यम से देश की मुख्य धारा में जोड़कर रेल संचालन में अद्भुत विकास किया है । भारतीय रेल एक ओर अपनी विरासत के प्रसिद्ध स्टेशनों को संजोए हुए है जैसे कुछ माह पूर्व170 वर्ष पुराने भायखला रेलवे स्टेशन को सांस्कृतिक विरासत संरक्षण के लिए यूनेस्को द्वारा "विरासत संरक्षण पुरस्कार" से सम्मानित किया गया तो दूसरी ओर संचालन के नए आयामों को स्वीकारा है जिसके कारण आज वंदेभारत एक्सप्रेस जैसी सेमी हाईस्पीड ट्रेनें दौड़ रही हैं । **"अमृत भारत स्टेशन योजना"** के प्रथम चरण के तहत पूरे देश में 508 स्टेशनों के पुनर्विकास का शिलान्यास 6 अगस्त, 2023 को किया गया है। उधमपुर-श्रीनगर-बारामूला जैसी कठिन परियोजना के अंतर्गत दुनिया के सबसे ऊँचे रेलवे आर्च ब्रिज **"चिनाब ब्रिज"** का निर्माण किया गया है। मुंबई-अहमदाबाद हाई-स्पीड रेल कारिडोर के अंतर्गत ठाणे क्रीक में समुद्र के नीचे प्रस्तावित 7 किमी लंबी सुरंग देश में बनने वाली पहली समुद्र सुरंग होगी जो दोनों ट्रैक को समायोजित करेगी। इस तरह भाप इंजन से वंदे भारत तक की यात्रा अब समुद्र के नीचे प्रस्तावित रेल सुरंग की ओर अग्रसर होकर रेल-संचालन में हो रहे निरंतर विकास को स्वर्ण अक्षरों से लिख रही है।

संजीव तिवारी
मुख्य संकेत एवं दूरसंचार इंजी.
(योजना एवं डिजाइन)
पश्चिम मध्य रेलवे, जबलपुर
मो. 9752415807

लेख

हिंदी साहित्य में जीवन दर्शन

संपूर्ण विश्व में केवल भारत ही एकमात्र देश है, जिसमें सृष्टि के आरम्भ से ईश्वर, विश्व की रचना, जीवन-चक्र, जीवन-दर्शन, आत्मा और परमात्मा से संबंधित विषयों पर सूक्ष्म विश्लेषण एवं विशद व्याख्या की गयी है। हमारे देश में समय-समय पर अनेक दार्शनिकों, महापुरूषों, विद्वानों एवं विचारकों द्वारा परमात्मा के स्वरूप, मानव जीवन मूल्यों एवं आदर्शों के विषय में विचार व्यक्त किये गये हैं, जो हमारे जीवन की विभिन्न अवस्थाओं एवं परिस्थितियों में हमारा मार्ग दर्शन करते हैं।

छांदोग्योपनिषद के अनुसार सृष्टि के प्रारम्भ में ब्रह्म एक ही था, उसके मन में विचार आया "एकोऽहं बहुस्यामि", अर्थात् "मैं एक हूँ, अनेक हो जाऊँ"। इस प्रकार एक ब्रह्म से अनेक रूप प्रकट हुए एवं सृष्टि की रचना प्रारम्भ हुई। आदि शंकराचार्य जी ने भी " अद्वैतवाद" का सिद्धांत प्रतिपादित किया। विश्व के अन्य धर्मों और दर्शन के अनुसार भी सम्पूर्ण सृष्टि का निर्माता एवं नियंत्रक एकमात्र ईश्वर ही है। इस प्रकार मौलिक रूप से ईश्वर के स्वरूप के विषय में कोई सैद्धांतिक मतभेद नहीं है।

कालांतर में आवश्यकता से अधिक विश्लेषण, मीमांसा और विरोधाभासी विचारों के कारण दर्शन शास्त्र का जटिल स्वरूप सामने आया और यही कारण है कि आधुनिक शिक्षा प्राप्त पीढ़ी, दर्शन शास्त्र में अधिक रूचि नहीं रखती अथवा उसे समझने में भ्रम की शिकार हो जाती है।

मानव जीवन में जीवन दर्शन का विशेष महत्व है। भारतवर्ष में हिंदी साहित्य के अनेक ऐसे विद्वान कवि हुए हैं, जिन्होंने बड़ी सरलता से ईश्वर के स्वरूप एवं मानव जीवन की व्याख्या की है। इनमें से कुछ रचनाओं को उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत किया जा रहा है:-

गोस्वामी तुलसीदास जी ने ईश्वर और संसार के विषय में इस प्रकार वर्णन किया है-

1. ईश्वर अंश जीव अविनासी।
   चेतन अमल सहज सुखरासी।।

इसका अर्थ है कि प्रत्येक जीव ईश्वर का अंश है एवं उसी के समान अनश्वर (अविनाशी) है। वह चैतन्य, स्वच्छ (निर्मल), सरल और सुख से परिपूर्ण है।

2. जड़ चेतन गुन दोषमय, बिस्ब कीन्ह करतार।
   संत हंस गुन गहहिं पय, परिहरि वारि बिकार।।

अर्थात् कर्त्ता (ईश्वर) ने निर्जीव, सजीव, गुण और दोषों से युक्त विश्व का निर्माण किया है। संत रूपी हंस गुण रूपी दूध को ग्रहण कर लेते हैं तथा जल रूपी विकार का त्याग कर देते हैं।

3. निरमल मन जन सो मोहि पावा।
   मोहि कपट, छल, छिद्र न भावा।।

रामचरित मानस के अनुसार भगवान राम ने कहा है कि, जिस व्यक्ति का मन निर्मल होता है वह ईश्वर को प्राप्त कर लेता है। मुझे (भगवान को) कपट, छल और द्वेष युक्त व्यक्ति अच्छे नहीं लगते।

4. तात स्वर्ग अपवर्ग सुख, धरिअ तुला एक अंग।
   तूल न ताहि सकल मिलि, जो सुख लव सत्संग।।

सत्संग का महत्व बताते हुए तुलसीदास जी कहते हैं कि, यदि संसार और स्वर्ग के सभी सुखों को तराजू के एक पलड़े में रख दिया जाये,तो वे भी तराजू के दूसरे के पलड़े में रखे एक क्षण के सत्संग की बराबरी नहीं कर सकते।

5. सोई जानहि जेहि देहु जनाई।
   जानत तुम्हहि तुम्हइ होइ जाई।।

हे ईश्वर, आपको वही जान सकता है, जिसे आप ज्ञान दे देते हैं। जब मनुष्य आपको जान लेता है तो वह स्वयं आपका स्वरूप प्राप्त कर लेता है।

ईश्वर के साकार और निराकार रूप के विषय में विद्वानों द्वारा अनेक विचार व्यक्त किये गये हैं। इस संबंध में बहुत वाद-विवाद होता रहा कि ईश्वर का वास्तविक रूप साकार है अथवा निराकार। भक्त कवि सूरदास जी ने निराकार ईश्वर और साकार ईश्वर की उपासना की तुलना करते हुए अत्यंत सुंदर व्याख्या की है-

अबिगति गति कछु कहत न आवै।
ज्यों गूंगे मीठे फल को रस, अंतरगत ही भावे।
परमस्वाद सबही सु निरंतर, अमित तोष उपजावे।
मन बानी को अगम अगोचर, सो जाने जो पावै।
रूप-रेख-गुन-जाति-जुगति-बिनु, निरालंब कित ध्यावे।
सब विधि अगम विचारै ताबै, सूर सगुन पद गावै।

इसका अर्थ है, निराकार ईश्वर की गति के विषय में कुछ कहा नहीं जा सकता। जिस प्रकार गूंगे व्यक्ति को मीठा फल खिलाने पर, वह उसके स्वाद की अनुभूति तो कर सकता है किन्तु उसे व्यक्त नहीं कर सकता। इस फल का स्वाद परम एवं निरंतर

है और बहुत संतोष उत्पन्न करने वाला है, किन्तु जो मन और वाणी से परे, अदृश्य तथा निराकार है उसे वही जान सकता है जो उसे पा लेता है। रूप-रेखा, गुणों जाति, युक्ति और आधार के बिना उसका ध्यान किस प्रकार किया जाये । इस प्रकार निराकार ईश्वर को सब विधियों की पहुंच से परे मानते हुए, सूरदास सगुण ईश्वर की उपासना करते हैं।

संत कबीर ने आत्मा और परमात्मा के संबंध में निम्नानुसार विचार व्यक्त किये हैं:-

1. जल में कुम्भ कुम्भ में जल है बाहर भीतर पानी।
फूटा कुम्भ जल जलहिं समाना यह तथ कह्यौ ग्यानी।।

इसका अर्थ है- जब पानी से भरा घड़ा पानी में रहता है तो, बाहर और भीतर पानी ही रहता है अर्थात् दोनों ओर पानी की ही सत्ता है। इसी प्रकार शरीर के अंदर और बाहर ईश्वर की ही सत्ता है और शरीर के नष्ट हो जाने पर आत्मा परमात्मा से उसी प्रकार मिल जाती है जिस प्रकार घड़े के फूटने पर घड़े के अन्दर का पानी बाहर के पानी से मिल जाता है।

2. कस्तूरी कुंडली बसे, मृग ढूंढे बन माहिं।
ऐसे घट-घट राम हैं, दुनिया जाने नाहिं।।

अर्थात् जिस प्रकार मृग की नाभि में कस्तूरी होती है, किन्तु वह उसे जंगल में ढूंढता रहता है, उसी प्रकार प्रत्येक जीव के शरीर में ईश्वर का वास होता है, किन्तु दुनिया के लोग इसे जान नहीं पाते हैं।

3. सात समंद सी मसी करौं, लेखानि बनराइ।
धरती सब कागद करौं, हरि गुन लिखा न जाइ।।

इसका अर्थ है कि यदि पृथ्वी के सातों समुद्र की स्याही बना ली जाये और जंगल के सभी पेड़ों को लेखनी या कलम बना लिया जाये और सारी धरती को कागज बना लिया जाये, तब भी भगवान के गुणों को लिखना संभव नहीं है। ईश्वर के गुणों का इतना सुंदर और संक्षिप्त वर्णन अन्यत्र दुर्लभ है।

4. ऐसी बानी बोलिये, मन का आपा खोय।
औरन को शीतल करे, आपहु शीतल होय।।

अर्थात् हमें ऐसी वाणी बोलनी चाहिये जो मन के अभिमान से रहित हो। दूसरों को शीतलता या शांति प्रदान करे और साथ में स्वयं को भी शांतिदायक हो। जीवन में इसका पालन हमारी अनेक समस्याओं का हल कर सकता है और बहुत सी समस्यायें तो उत्पन्न ही नहीं होगीं।

5. पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय।
ढाई अक्षर प्रेम का पढ़े सो पंडित होय।।

कबीर दास जी कहते हैं कि, केवल पुस्तकीय ज्ञान से कोई विद्वान नहीं बन सकता। केवल ढाई अक्षर के शब्द प्रेम का सही अर्थ जान लेने पर भी व्यक्ति विद्वान बन सकता है।

कवि रहीम ने अपने दोहों में बड़ी सारगर्भित बातें कही हैं:-

1. रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून।
पानी गये न ऊबरैं, मोती, मानुस, चून।।

कवि रहीम कहते हैं कि पानी के बिना सब सूना है इसलिये पानी रखना जरूरी है। मनुष्य के लिये पानी का तात्पर्य विनम्रता से है, मोती के लिये चमक और चूने के लिये पानी। इनके अभाव में तीनों चीजें अपना प्रभाव खो देती हैं।

2. तबहीं लौ जीवो भलो, दीवो पड़े न धीम।
बिन दीवो जीवो, हमें न रूचे रहीम।।

हमारा जीवन तभी तक अच्छा है, जब तक हमारे द्वारा संसार को किसी न किसी रूप में कुछ देना जारी रहता है। बिना दिये हुए जीवन जीना, हमें अच्छा नहीं लगता।

3. रहिमन देख बड़ेन को, लघु न दीजिये डारि।
जहाँ काम आवे सुई, कहाँ करै तरवारि।।

बड़े व्यक्तियों को देखकर, छोटों को महत्वहीन नहीं समझना चाहिए, क्योंकि जो काम सुई कर सकती है, वह तलवार नहीं कर सकती।

4. देनहार कोउ और है, देत रहत दिन रैन।
लोग भरम हम पर करें, याते नीचे नैन।।

संसार में देने वाला कोई और है अर्थात् ईश्वर, जो रात-दिन हमें कुछ-न-कुछ देता रहता है। लोग मुझे दानदाता समझकर भ्रम में पड़ जाते हैं, इसलिये मैं अपनी आँखें नीचे रखता हूँ।

5. मनुष्य नहीं बलवान होत, समय होत बलवान।
भीलन लूटी गोपिका, वेही अर्जुन वे ही बान।।

मनुष्य शक्तिशाली नहीं होता बल्कि उसका समय शक्तिशाली होता है। एक समय अर्जुन जंगल में बृज की गोपिकाओं की रक्षा के लिये उनके साथ जा रहे थे, किन्तु जंगल में भीलों ने गोपियों के आभूषण छीन लिये थे और वे इतने पराक्रमी योद्धा होते हुए भी उनकी रक्षा नहीं कर सके, क्योंकि उनका समय विपरीत था।

भक्त कवि रसखान ने भी ईश्वर की सरलता की बड़ी सुंदर व्याख्या की है, जो इस प्रकार है:-

सेष महेस गनेस दिनेस सुरेसहु जाहि निरंतर गावैं।
जाहि अनादि अनंत अखंड अछेद अभेद सुवेद बतावैं।।

नारद से सुक व्यास रटैं, पचि हारे तौ पुनि पार न पावैं।
ताहि अहीर की छोहरियां, छछिया भरी छांछ पे नाच नचावैं।।

जिस ईश्वर का शेषनाग, शिव जी, गणेश जी, सूर्यदेव एवं इंद्रदेव निरंतर गुणगान करते रहते हैं और जिसे वेद अजन्मा, अंतरहित, अखंड, दोषरहित और भेदरहित बताते हैं, नारद जी, शुकदेव जी, व्यास जी जिनका वर्णन करके थक गये, किन्तु पार न पा सके, ऐसे ईश्वर को बृज की गोपियां, थोड़ी सी छांछ के लिये नाच करवाती हैं। इस प्रकार ईश्वर इतने सरल हैं कि वे भक्त के प्रेम से सहज ही वश में हो जाते हैं।

भाग्य और कर्म के बीच भी अनेक प्रकार के विचार समय-समय पर विद्वानों ने व्यक्त किये हैं। हिंदी साहित्य के अध्ययन से इस विषय का भी सहज समाधान मिल जाता है।

1. कर्म प्रधान बिस्ब करि राखा।
   जो जस करहिं, सो तस फल चाखा।।

रामचरितमानस के अनुसार संसार को ईश्वर ने कर्म प्रधान बनाया है। जो जैसा करते हैं, उन्हें वैसा ही फल भोगना पड़ता है।

2. कोउ न काहू सुख दुख कर दाता।
   निज कृत कर्म भोग सब भ्राता।।

अर्थात् संसार में कोई किसी को सुख अथवा दुख देने वाला नहीं है। सभी को स्वयं के द्वारा किये गये कर्म का फल भोगना पड़ता है।

3. करता था तो क्यों रहा, अब काहे पछताय।
   बोया पेड़ बबूल का, आम कहॉ से खाय।।

कबीर दास जी कहते हैं कि व्यक्ति जीवन में जैसा कार्य करता है वैसा ही उसे फल मिलता है, जिस प्रकार बबूल का पेड़ लगाने पर आम नहीं खाये जा सकते।

इस प्रकार हम देखते हैं कि आज से लगभग 500 वर्ष पूर्व भक्त कवियों द्वारा लिखी गयी सारगर्भित, अनुपम और कालजयी रचनाओं में आज भी मानव जीवन को अत्यंत महत्वपूर्ण मार्ग दर्शन प्राप्त हो सकता है। इसीलिये भक्तिकाल को हिंदी साहित्य के इतिहास का स्वर्णयुग कहा जाता है।

नीरज दुबे
उप मुख्य इंजी. निर्माण/ योजना
मुख्यालय, प. म. रे., जबलपुर
मो. 9752415232

वो जमी से जुड़ा इंसान

वो आसमान था मगर सर झुका के चलता था,
हर दर्द अपना सहता मगर मुस्कुरा के चलता था।

ऊँचाइयों पर था पर जमीं को न छोड़ा उसने,
बड़ा इंसान था मगर 'मैं' को न जोड़ा उसने।

खुदा के करम का वो एक अक्स लगता था,
ऊँचा मिजाज था मगर हर दिल से जुड़ता था।

तूफानों को चीर कर भी वो शांत रहता था,
बड़ा होकर भी हर छोटे को बड़ा कहता था।

सादगी उसकी ताकत थी हर दिल को अपना बना लेता,
ऊँचाई पर था मगर हर इंसान के करीब रहता।

जमीं से उठकर भी उसने आसमान को छू लिया,
पर हर कदम पर इंसानियत का दामन थाम लिया।

उसकी बातों में मिठास थी लहजे में एक अपनापन,
बड़ा था मगर हर किसी के साथ निभाता था जीवन।

ऊँचाइयों को छूकर भी वो विनम्रता का प्रतीक था,
वो इंसान नहीं जैसे खुदा का अजीम संगीत था।

धनराज सिंह
उप मुख्य सर्तकता अधिकारी / यातायात
मुख्यालय,पश्चिम मध्य रेलवे, जबलपुर
मो. 9752415033

लेख

लेखन का आनन्द : डिजिटल युग में पत्रों का महत्व

समय निरन्तर गतिमान है और साथ ही परिवर्तनशील भी, कालचक्र निर्बाध गति से बिना किसी की प्रतीक्षा किये सतत् घूम रहा है। समय के साथ विविध समसामायिक बदलाव भी निश्चित नियति के प्राकृतिक नियम हैं। प्राणियों में मनुष्य एक विवेकशील प्राणि हैं और वह अपने जीवन को बेहतर से और बेहतर बनाने की दिशा में सदैव प्रयत्नशील रहता है और इसका हम परिणाम भी देख रहे हैं कि हमारी समूची जीवन शैली में कितना बदलाव आया है।

वर्तमान युग सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में क्रांति का युग है। आज जैसा की कहा जाता है पूरी दुनियां हमारी मुट्ठी में है, और इस समूचे संसार को हम 'ग्लोबल विलेज' या 'वैश्विक ग्राम' की संज्ञा देते हैं। आज हमारे हाथ की अंगुलियों से हम कम्प्युटर, लैपटॉप और मोबाइल पर 'की-बोर्ड' का बटन दबाते ही पलक झपकते ही कुछ क्षणों में कोई भी दृश्य अथवा श्रृव्य सूचना देश अथवा विदेश के किसी भी कोने में सहजता से पहुंचाई जा सकती है और प्राप्त भी की जा सकती है।

आज का युग 'ई-युग' है। अब हमारे डाक के पते यानि पोस्टल एड्रेस' को ई-मेल एड्रेस में बदलते देख रहे है यानि हम लघु से लघुत्तम होते जा रहे हैं। पहले हमारे पते में सिर्फ मकान नम्बर या गली नम्बर व मोहल्ले व शहर का नाम ही नहीं हुआ करता था बल्कि उसके साथ हुआ करता था, हमारे निवास का पूरा विस्तृत वर्णन जैसे टेकरी वाले हनुमान मंदिर के पास, खारे कुएँ के बगल में, सरकारी अस्पताल के सामने, पटेल साहब का मकान आदि-आदि। यानि चिट्ठी कहीं लापता न हो जाए, पता कुछ ऐसा लिखा जाए। और अब यह ई-मेल एड्रेस डिजिटल समय में एक ही लाइन में। एट द रेट डॉट काम' और हो गया, मजाल कुछ पता चल जाए पढ़कर की पता कहाँ का है।

समय के साथ चलने के लिए, समय के साथ होने वाले परिवर्तनों को हमें स्वीकारना ही होगा, अन्यथा आप समाज की मुख्य धारा से पिछड़ जायेंगे अथवा बाहर हो जायेंगे। हम भी समय के साथ स्व यं को बदलें और इस परिवर्तन को स्वीकार करें परन्तु इन सबका अर्थ यह कतई नहीं कि हम जो कुछ भी पुरातन है उसे पूरी तरह त्याग दें या उसे भूल जाए। यानि हम आज जिस नींव पर खड़े हैं और एक नई इमारत की इबारत लिख रहे हैं, उसको पूर्ण रूप से विस्मृत ही कर दें। हमारा लक्ष्य आसमान छूना तो हो परन्तु ध्यान रहे हमें अपनी जमीन और जड़ों से जुड़े रहना चाहिये।

आज के इस युग यानि डिजिटल समय में हस्तलिखित चिट्ठियां न सिर्फ गुमशुम हैं, बल्कि गुमशुदा हैं। हमें इन गुमशुम और गुमशुदा चिट्ठियों को एक बार फिर महकाना होगा, चहकाना होगा। हमको फिर से एक बार वो पीले रंग का पोस्ट कार्ड, नीले रंग का अन्तर्देशीय (इस पत्र के भीतर कुछ न रखिये) और लिफाफे की ओर लौटते हुए, पत्र लेखन की समृद्ध परम्परा को पुनर्जीवित करना होगा।

आपको याद करना होगा, अपने पोस्ट मैन काका को जो जैसे ही हमारे घर के सामने आकर साइकिल की घण्टी बजाकर आवाज लगाते थे 'पोस्ट मैन' तो पूरे घर में कैसी हलचल मच जाती थी, कैसे पोस्ट मैन से चिट्ठी लेने पूरा घर दौड़ पड़ता था, और फिर इस चिट्ठी को पहले कौन पढ़े पर झीना-झपटी होती थी। इन पत्रों में हँसी-खुशी के साथ कभी-कभार गम के समाचार भी होते थे । यह चिट्ठियां शुरु होती थीं। अत्र कुशलम् तथास्तु' यानि यहां कुशल सब भांति सुहाई वहां कुशल राखें रघुराई से।' फिर बड़ों को नमस्कार से छोटों को प्यार तक, कितनी-कितनी बातें, सब बड़े ध्यान और चाव से सुनते थे, इसके बाद भी यह चिट्ठी दिन में कई बार और कई दिनों तक पढ़ी जाती थी।

चिट्ठी पढ़ने के बाद, चिट्ठी का जबाव देना भी एक पूरा काम हुआ करता था। बेचारे पंद्रह पैंसे के पोस्ट कार्ड और पचास पैसे के अन्तर्देशीय का कोना-कोना शब्दों से गोद दिया जाता, फिर भी कुछ न कुछ लिखने की हसरत मन में रह ही जाती थी। कई बार पत्र कब लिखा गया और कब वह पहुँचा यानि उसने कितने दिनों में अपनी यात्रा पूरी की, इस बात पर भी चर्चा छिड़ जाती और तब इन पत्रों पर लगी मुहर की तारीखें पढ़ने की कोशिश होती कि आखिर पत्र रुका कहां था। मोहल्ले में एक घर चिट्ठी आती तो दूसरे पड़ोसी पोस्ट मैन से पूछ लेते कि भैया देखना-कहीं हमारी चिट्ठी तो नहीं है। कोई कहता फूफा जी ने अभी तक चिट्ठी का जबाव नहीं दिया, कोई मामा जी या मौसा जी को याद करता।

पत्र लिखने के बाद वो लाल डिब्बा जो गाँवों, कस्बों अथवा शहरों की खास सड़कों व चौराहों पर स्थापित होता है, में पत्र डालने जाना और घर वालों का कहना कि चिट्ठी ध्यान से डालना, कहीं गुमा न देना । इस डिब्बे पर लिखा होता – रविवार को नहीं खुलेगा और खुलने का समय भी इस पर लिखा होता, चिट्ठी डालने के बाद इसके मुँह में बार–बार हाथ डालकर निश्चित करना कि चिट्ठी कहीं अटक तो नहीं गई। चिट्ठी डालने के बाद पलट–पलट कर डिब्बे को देखना, क्या अनुभव था ।

यह चिट्ठियां अपने समय की जीवंत दस्तावेज हैं। अगर यह चिट्ठियां नहीं लिखी गई होती तो आपके पास तात्याटोपे और क्रांतिकारी मंगल पाण्डे के पत्र कैसे होते। आप गांधी, टैगौर और शहीद भगत सिंह की भावनाओं को कैसे समझ पाते। आज कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद, महादेवी वर्मा, बच्चन और बैरागी के पत्र हमारी साहित्यिक ही नहीं ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहर हैं। इनसे हमें तत्कालीन समय की कई महत्वपूर्ण घटनाओं और परिस्थितियों का पता चलता है। इन पत्रों को देखना पढ़ना हमें आज भी भाव विभोर कर देता है। वैसे कहा भी गया है 'सौ बका एक लिखा' यानि मौखिक कही हुई बातों से एक लिखी हुई बात ज्यादा महत्वपूर्ण है। इस प्रकार यह दुर्लभ पत्र आज हमारी बहुमूल्य निधि हैं।

अब वर्तमान युग चटपट या खटपट युग है यानि द्रुत गति से भागता सरपट युग। किसी के पास धैर्य नहीं किसी के पास समय नहीं। अब हम सब मोबाइली समय में जी रहे हैं। मोबाइल यानि चलित या चलते–फिरते यानि कोई चीज स्थिर नहीं कोई जड़ नहीं कोई ठहराव नहीं, इसी के साथ हमारे रिश्ते भी स्थिर नहीं रहे। इस डिजिटल युग को हिंदी में आभासी दुनिया कहा जाता है। आभासी यानि कृत्रिम वास्तविकता और सत्य से परे फिर हमारे मित्र और रिश्तेदार भी आभासी रिश्ते निभा रहे हैं।

अब चिट्ठी की जगह 'ई' मेल अथवा फेस बुक, व्हाट्सऐप पर 'मैसेज सैन्ड' ने ले ली है। चट में सेन्ड पट में डिलिट, स्मृतियों को सहेजने, संवारने का समय गया। अब तो 'मैमोरी फुल' की वार्निंग हमें स्मृतियों में कुछ रखने का अवसर ही नहीं देती, यह डिजिटल के साथ ही डिलिट समय भी है यानि 'यूज एन्ड थ्रो' इस्तेमाल करो और फेंको। अब तो 'ऑन स्क्रीन' लिखने का समय भी नहीं रहा, उसमें भी शॉर्टकट यानि 'ब्रदर' को 'ब्रो' और सिस्टर को ' सिस' और आई लव यू' जैसा प्यारा शब्द 'इलू ' हो कर रह गया है और तो और अब इलू से आगे 'इमोजी' आ गई तो प्यार भरे दिल और फूलों के गुलदस्ते, 'सो सेड' और आंसू भरी आँखों से सुख–दु:ख भेजने व्यक्त करने का समय चल रहा है और आगे............कुल मिलाकर कहने का आशय सिर्फ इतना कि नये को तो खूब अपनायें पर पुराने को पूरी तरह न भूलें। वरना याद करिये हमारी भारतीय फिल्मों के उस सुनहरे युग को जब बिना चिट्ठी और खतों के कोई फिल्म और गाना ही पूरा नहीं होता था, यह गाने भावनाओं से, प्रेम से भरे होते थे। इन दृश्यों को देख दर्शकों को आँसू बहाते हुए देखा जा सकता था और आज भी यह गाने और उनमें निहित चिट्ठियों के प्रति आम आदमी के लगाव संवेदनशीलता की कभी न विस्मृत करने वाली अनमोल स्मृतियां हैं कभी आप भूल सकते हैं इन अनमोल गानों को – 'चिट्ठियां होय तो हर कोई बांचे, करम न बाचौं कोय, । डाकिया डाक लाया, डाकिया डाक लाया। आएगी जरूर चिट्ठी मेरे नाम की। फूल तुम्हें भेजा है खत में, फूल नहीं मेरा दिल है। कबूतर जा जा जा कबूतर जा जा जा। संदेशे आते हैं, संदेशे जाते हैं। चिट्ठी आई है आई है चिट्ठी आई है...।

बात बस इतनी सी, हमें इस भागदौड़, भरी जिंदगी इस डिजिटल युग में से कुछ समय चुराना है, कुछ समय निकालना है और अपने संस्कार और संस्कृति को बचाये रखने के लिए अभय आनंद के लिए, समय को चिट्ठियों के माध्यम से सदा के लिए अपनी स्मृतियों का हिस्सा बनाने के लिए कभी–कभार विशेष अवसरों जैसे किसी तीज–त्यौहार, किसी बड़ी उपलब्धि, जन्म दिवस, विवाह की वर्षगांठ आदि पर अपने हाथों से अपनों के लिए एक पत्र लिखिये। फिर उसका आनंद उसकी अनुभूति देखिये। तब ही तो उदय प्रकाश जी ने लिखा है–

'सब फैसले होते नहीं सिक्के उछाल के,
ये दिल का मामला है जरा देख भाल के,
मोबाइल के दौर के आशिकों को क्या पता,
रखते थे कैसे खत में कलेजा निकाल के।।

घनश्याम मैथिल 'अमृत'
वरिष्ठ हिंदी साहित्यकार एवं
सेवानिवृत्त, वरिष्ठ तकनीशियन
सडिपुका, भोपाल, पमरे
मो. 9589251250

व्यंग्य

मोबाइल और शनि की साढ़े साती

सचमुच बहुत ही बुरा हुआ। ईश्वर किसी के साथ ऐसा न करे। इतना खराब भाग्य। मैं तो डर ही गया। दिन बिलकुल अच्छे नहीं चल रहे हैं। पता नहीं अब क्या होगा।

शनिवार की शाम को अचानक लगभग आठ बजे मेरे मोबाइल की तबियत खराब हो गई,मैं घबरा उठा। देखा चार्जिंग रूपी हृदयगति रूक गई है। बस पुरानी की हुई चार्ज की बैठरी में चालीस प्रतिशत ऑक्सीजन बची हुई थी। सोचा कहीं मेरा चार्जर तो खराब नहीं है। मैं भागा, आस-पड़ौस से चार्जर मांगकर लाया। हालांकि बरसों से नाक के कारण कभी एक कील तक न मांगी थी। पर अब सवाल मोबाइल के जीवन-मरण का था, सो काहे का इगो। झट से लाकर चार्जर सिलेंडर में ऑक्सीजन की पिन लगा दी, पर यह क्या।साँसे पूर्ववत बंद थी। मैंने तमाम देशी टोने-टोटके आजमाए चार्जर को बार-बार लगाया,तार को झटका,उसकी हृदय रूपी बैटरी को दबाया, पिन को कई बार हिलाया। हाँ, अंतिम उम्मीद भगवान से भी प्रार्थना की। पर हालात जस के तस। मैं उदास हो गया। कितने खराब दिन चल रहे थे। एक तो मोबाइल गंभीर और ऊपर से शनिवार रात की साढ़े साती। अब दुकानें भी बंद हो गई और कल रविवार था। हालात सोमवार से पहले सामान्य नहीं होने वाले थे। पर अब किया क्या जा सकता था। दिल बैठ गया। रात का खाना भी गले से नहीं उतरा। कैसे उतर सकता था। अपने सबसे प्रिय को मौत के रास्ते जाता देख रहा था और कुछ नहीं कर पा रहा था। सचमुच भाग्य के आगे इंसान कितना विवश है। दादी के निधन के तीसरे दिन यह सोचकर फिल्म चला गया था कि शरीर के लिए क्या मोह करना, शरीर मिट्टी है। पर अब पता चला कि जब कोई अपना सगा वाला जाता है तो कितना दुख होता है। फौरन उपलब्ध कुशलतम सर्जन बेटी को मोबाइल दिखाया। उसने भरपूर प्रयास भी किया। आजकल के बच्चे जन्मजात परम मोबाइल विशेषज्ञ होते ही हैं। उसने मोबाइल को फौरन बेट्री, सेव मोड पर डाल दिया। सांसे कुछ देर और बढ़ सकती थी। रात को नींद नहीं आई। कैसे आ सकती थी। रातभर उठ-उठकर मोबाइल को देखता रहा। चार्जिंग ऑक्सीजन लेबल चेक किया। लगातार डाउन ही होता जा रहा था। कई बार पिन दुबारा लगाया। रात कैसे निकली, यह रात ही जानती है।

सुबह उठा, तो मोबाइल की साँसे चल रही थी, पर कितनी देर यह ईश्वर ही जानता था फिर भी रात को बैटरी सेव मोड पर रखने से ऑक्सीजन अधिक खर्च नहीं हुई थी। मैंने थोड़ा नेट ऑन किया। व्हाहटसऐपीय चिड़ियाऐं चहचहाने लगी। फेसबुकीय सौन्दर्य मुस्कराने लगा। इंस्ट्रा फूल खिलने लगे। मैं मानो स्वर्ग में आ पहुंचा परंतु उधर तेजी से मोबाइलीय बैटरी का ऑक्सीजन लेबल गिर गया। दु:ख की घड़ी थी। मोबाइल की साँसे किसी भी समय टूट सकती थी। अत: मैंने सभी परिचितों को सूचित करने का कड़ा फैसला लिया। समय का क्या भरोसा। यह दुनिया क्षणिक है,पता नहीं सोमवार को रहे या नहीं। अत: सभी से बात की। सभी लोग बहुत भावुक हो गए। कैसे जी पाएंगे। पर कहते हैं कि ईश्वर की बनाई हुई इसी दुनिया में ईश्वर भी है। ईश्वर ही तो है,जो मोबाइल की साँसे छीन सकता है तो जीवन दे भी सकता है। एक भगवान स्वरूपीय परममित्र ने, इतने बरसों में आज ही समझ पाया कि मेरा सच्चा मित्र कौन है, एक मोबाइल मैकेनिक के बारे में न केवल बताया बल्कि फोन भी कर दिया। वो अवकाश के बावजूद घर पर फोन को देख लेगा।

इस भले संसार में मैं कुछ ही देर बाद ईश्वर रूपी मैकेनिक के घर बैठा हुआ था। मैकेनिक ने कार्य शुरू ही किया था, पर तभी विघ्न पैदा हो गया। अचानक ही उनकी पत्नी पर्दा हटाकर सामने प्रकट हुई। "ये छुटटी के दिन भी घर पर दुकान लगाकर बैठ गए। कल करना। आज डॉक्टर से टाइम ले रखा है।' मेरा दिल बैठ गया। पत्नी की आज्ञा भला कौन टाल सकता है। मैं सही था, मेरी प्रजाति के ही उस आज्ञाकारी पति ने मोबाइल एक तरफ खिसका दिया। 'मैं कौनसा कर रहा था पर यह तुम्हारे भाई के मित्र प्रतीक ने भेजा है।' भाई का नाम सुन पत्नी बैकफुट पर आई। 'अरे, प्रतीक भैया ने भेजा है क्या?अरे कर दो। तुमने बताया ही नहीं। चाय-पानी की तो पूछ लेते। अरे भाईसाहब, मेरे यहाँ से कोई आए इन्हें बिलकुल अच्छा नहीं लगता। डॉक्टर का क्या है फिर कभी दिखा देंगे।" मैकेनिक ने फौरन सबसे सगे वालों का मोबाइल हाथ में ले लिया। वो अंदर चली गई। उस दिन मैंने परम ज्ञान प्राप्त किया। जहां नारी की पूजा होती है, वहाँ देवता बसते हैं। मैकेनिक की परम पत्नी भक्ति भाव ने मेरे मोबाइल के प्राण बचा लिए। थोड़ी ही देर में मेरे मोबाइल के प्राण वापस लौट आये।

अब मैं परम संतुष्टि भाव में था। कितना, यह वो ही जान सकता है। जिसका शनिवार रात को मोबाइल खराब गया हो। मैं पुनः अपनी दुनिया में था। व्हाहटसऐपीय चिड़ियायें फिर चहचहाने लगी, इंस्ट्रा फूल खिलने लगे, फेसबुकीय सौन्दर्य झूम उठा।

शरद उपाध्याय

वरि. हिंदी साहित्यकार एवं

सेवानिवृत्त कार्यालय अधीक्षक

कोटा मंडल, पमरे

मो. 9414226981

लेख

आधार, अंधेर और अधर में लटका गोबर

पिता श्री रामलाल के घर नौकर थे। उन्हें घर की बेगारी के साथ गौशाला में भी काम करना पड़ता था। गाय की सेवा करने एवं गोबर साफ करने का यह असर हुआ कि अपनी इकलौती औलाद का नाम ही '' गोबर '' रख दिया। बेगारी करते-करते बाप परलोक सिधार गए। विरासत में गोबर को बेगारी मिली।

एक दिन भाग्य ने पलटा खाया। सरकार को गरीबों की सुध आई। चुनाव करीब थे। सब को अपने-अपने वोट बैंक की चिंता सता रही थी। केन्द्र से '' गरीबी मिटाओ '' या '' गरीब मिटाओ'' जैसी योजनायें बनने लगी। योजना का मूलमंत्र था कि किस तरह अमीरों को और अमीर और गरीबों को और गरीब बनाया जाये। योजना के नाम पर घोटालों का समीकरण बैठाया जाने लगा। घोटालों की इन योजनाओं में संतुष्टों और असंतुष्टों का, कितना प्रतिशत रहेगा, यह तय हो गया। इस बार प्रतिशत में प्रतिपक्ष का भी पूरा ध्यान रखा गया ताकि बाद में हो हल्ला न मचे।

केन्द्र से करोड़ों का अनुदान '' गरीबी उन्मूलन '' के नाम पर घोषित किया गया। बड़े-बड़े घोटाले बाजों ने यह तय किया कि इस बार गरीबों को अपना हक सीधे मिले। बिचौलियों का कोई रोल न रहे। अनुदान की राशि सीधे हितग्राहियों के खाते में डाली जाएँ। सरकार की इस घोषणा से बिचौलियों को तकलीफ तो जरूर हुई। मगर क्या करें साहब, सरकारी आदेश थे। उसका पालन तो करना ही था। बड़े-बड़े घोटालों पर से ध्यान हटाने के लिए सरकार नित्य नए फार्मूलें ढूंढ ही लेती है।

सौभाग्य से गोबर का नाम भी इस सूची में था। यह सौभाग्य गोबर को गरीबी के कारण मिला था या कि पंचायत सचिव कृपाराम की कृपा से, कहना कठिन था। वैसे जानने वाले यह कहते थकते नहीं कि गोबर का नाम इस सूची में इसलिए जुड़ा था, क्योंकि गोबर दिन रात कृपाराम के घर बेगारी करता था।

लोगों ने सलाह दी कि केन्द्रीय अनुदान का लाभ लेना है तो पहले बैंक में खाता खुलवाओं गोबर डरते-डरते बैंक पहुँचा। गेट पर खड़े संतरी ने गोबर को ऊपर से नीचे निहारा। फिर उसने उसे ऐसी तेज नजरों से देखा कि गोबर अपने आप में सिमट गया। संतरी ने गोबर को घुड़क कर भगा दिया। बेचारा संतरी भी क्या करें। गोबर का हुलिया ही ऐसा था कि वह कहीं से भी साहूकार नजर नहीं आता था। उस पर शक्ल भी पूरी माशा अल्लाह, काठ के पूरे चोर के जैसी।

लोगों ने सलाह दी कि यह दुनिया दिखावे की है। गोबर ने थोड़ा बहुत अपना चेहरा मोहरा दुरुस्त किया। कुछ रंग-ढंग के कपड़े पहने और बैंक के अन्दर पंहुच गया। इस बार उसे किसी ने रोका-टोका नहीं। जीरो बैलेंस के नाम पर बैंक कर्मी ने नाक मुंह सिकोड़े।

'' अभी मैनेजर साहब नहीं है, जब रहेंगे तब आना। हम कोई खाता नहीं खोलेंगे। तुम लोगों को यही बैंक दिखती है क्या, खाता खुलवाना है तो दूसरे बैंक चले जाओ। ''गोबर को दो-तीन बार यही कह कर टरकाया गया। मगर गोबर भी एक दिन अंगद के पैर की तरह बैंक में जम ही गया। बैंक क्लर्क को मन मार कर उसे झेलना ही पडा। मगर उस बैंक कर्मी का बड़बड़ाना बदस्तूर जारी रहा।

''साली अच्छी बेगारी है। सरकार ने सारे काम हमारे मत्थे मढ़ दिये हैं। मानो हम कोल्हू के बैल हैं। किसी को लोन दो, किसी को पेंशन। पहले एक तरह की पेंशन होती थी और अब तो न जाने कौन-कौन सी पेंशन सरकार ने चला रखी है। हो सकता है कि भविष्य में लोगों की अंतिम यात्रा और क्रियाकर्म की जिम्मेदारी भी हम बैंक कर्मचारियों को ही निभानी पड़े। खाते का नाम होगा '' क्रिया कर्म खाता ''। एक मुश्त रकम बैंक में जमा करवाओ और इस चिंता से मुक्त हो जाओ कि मरने के बाद हमारे ''क्रिया कर्म'' का इंतजाम कौन करेगा। मृत्यु भोज कौन करवायेगा। अर्थी को कांधा कौन लगायेगा। आपके पैसों से ये सारा प्रबंध बैंक करेगा। एक निश्चित समय के लिए आपकी रकम बैंक के पास रहेगी। आप नियत समय में भगवान को प्यारे हो गए तो बैंक की जिम्मेदारी शुरू और नकली खाद्य सामग्री

खाने से, बीपी, शुगर के झटकों से यदि नियत समय में अल्लाह को प्यारे न हुए तो आपके पास दो ऑप्शन होंगे या तो आप अपनी रकम ब्याज सहित वापस ले लो या उसकी वैधता आगे के लिए बढ़ा दो। '' बैंक के बाबू को बड़बड़ाते देखा तो गोबर अपने आप में सिकुड़ गया। मानो सारा दोष उसी का हो। शर्म और झेंप के कारण गोबर की आंखें जमीन में गड़ी जाती थी। '' वोटर कार्ड, आई. डी.प्रूफ, रेसीडेंस प्रूफ कुछ है ? '' बैंक के बाबू ने पूछा। मगर गोबर महाशय अपने आप में खोये काँप रहे थे।

'' अरे......कहाँ–कहाँ से आ जाते है ? अरे भाई साहब मैं आप ही से पूछ रहा हूँ। '' बैंक के बाबू ने आँखें तरेर कर कहा।

'' ई....... का होत है बाबू....... । '' गोबर ने मासूमियत से पूछा।

'' मेरा सर........ । '' बैंक के बाबू ने झल्लाते हुए कहा।

बैंक के बाबू के तेवर देख कर गोबर की हिम्मत न पड़ी की '' मेरा सर '' का मतलब क्या है पूछे।

'' अरे बाबू साहब, आप भी कमाल करते हो। उसे वोटर कार्ड का मतलब खाक समझ में आयेगा। यह ठहरा निपट अनपढ़ गंवार. ''

पास ही खड़ा एक व्यक्ति बोला।

'' तो जनाब...... आप ही शुद्ध हिंदी में समझा दीजिये। '' बैंक बाबू ने झल्लाते हुए कहा। उस व्यक्ति को गुस्सा तो बहुत आया मगर, क्या करें, उसकी भी मजबूरी थी। वह भी छः दिन से पर्सनल लोन के लिए भटक रहा था। आज उसके काम बनने की उम्मीद थी और वह बाबूजी को भड़का कर अपना काम बिगाड़ना नहीं चाहता था। इसलिए मन मसोस कर रह गया।

'' तुम्हारे पास मतदाता पत्र तो होगा..... वही फोटो वाला।

गोबर की गर्दन इंकार की मुद्रा में हिलने लगी।

'' तो गरीबी रेखा वाला बी.पी.एल.कार्ड होगा, उससे भी काम चल जाएगा। ''

गोबर की गर्दन पहले से भी तेज ढंग से इंकार में हिलने लगी।

'' तो आधार कार्ड तो जरूर ही होगा। यह तो अब बहुत ही जरूरी हो गया है। ''गोबर ने अत्यंत ही दयनीय मुद्रा में गर्दन हिलाई।

'' अब तो खुश न, महाशय के पास एक भी डाक्यूमेंट्स नहीं है, और चले है खाता खुलवाने.... और वो भी जीरो बैलेंस वाला। ''

गोबर अपने आप में सिमट गया और थके कदमों से बैंक के बाहर आ गया।

एक दिन गोबर अपनी टपरिया में लेटा हुआ था कि जोर की हवा चली। टपरिया की मचान से ढ़ेर सारा कचरा सिर पर आ गिरा। गोबर का दिमाग वैसे ही भिन्नाया हुआ था, उस पर यह मुसीबत। गोबर ने हवा रुकने पर वहाँ पड़ा कचरा बाहर फेंका। उसी कचरे में एक तुड़ा–मुड़ा–सा राशन कार्ड मिल गया। वह पढ़ा लिखा तो न था। मगर इतना भी अहमक न था कि राशन कार्ड को न पहचान सके। किसी ने कहा था कि राशन कार्ड के आधार पर आधार कार्ड बन जायेगा। गोबर की बांछे खिल गई। उसने आधार कार्ड केन्द्र की ओर दौड़ लगा दी।

गाँव के नुक्कड़ पर एक प्रायवेट डॉक्टर का क्लीनिक था। आम बोलचाल की भाषा में जिसे झोला छाप डॉक्टर कहा जाता है। ऐसी कौन–सी बीमारी थी जिसका इलाज वहाँ नहीं होता हो। लोगों को अच्छा करते/बीमार करते–करते अच्छा पैसा कमा लिया था। गाँव में अच्छे डॉक्टर कहाँ थे, उस का भरपूर फायदा उसने उठाया था। उसी कमाई से उसने एक शानदार मकान बनवा लिया था। जब आधार कार्ड बनवाने वाले गाँव में आए और उनको अपना केम्प चलाने के लिए जगह की आवश्यकता पड़ी तो डॉक्टर साहब ने अपना एक कमरा उन्हें दे दिया। यह ऐसा था कि आम के आम और गुठलियों के दाम। एक तो कमरे का किराया मिल गया। उस पर डाक्टर साहब ने एक फोटोकॉपी की मशीन रखवा ली। पहले उनका सहायक मरीजों को दवाईयां बांटता था और अब फोटोकॉपी करता क्योंकि अकसर फार्म खत्म होने के कारण लोगों को डाक्टर साहब के यहाँ से फार्म लेने पड़ते। साथ ही उस के साथ लगने वाले दस्तावेजों की फोटोकॉपी भी करवाना पड़ती। डॉक्टर साहब की डाक्टरी से ज्यादा फोटोकॉपी की दुकान चल निकली थी।

जब गोबर आधार कार्ड केन्द्र पहुँचा तो वहां मेला–सा लगा हुआ था। कमरे के बाहर भीड़ का एक हुजूम–सा जमा था। अभी दरवाजा बंद था। वहाँ की धक्का–मुक्की और चहल–पहल देख कर यूँ लगता था मानो मेला लगा हो या मुफ्त की शक्कर बंट रही हो या कमरे के अन्दर किसी फिल्मी बाला का आयटम सांग होने जा रहा हो।

लोग बाग एक-दूसरे को धक्के दे रहे थे, जिस कारण हर बार उनकी खड़े होने की स्थिति बदलती जा रही थी। जो लोग कुछ देर पहले दरवाजे के पास खड़े थे, वही अगले ही पल लाइन से बाहर जा गिरे। लोग-बाग आपस में एक-दूसरे को मीठी जुबान में एक से एक जुमले कस रहे थे। ऐसे जुमले जिन्हें साहित्यिक भाषा में " गाली "कहा जाता है।

जैसे ही दरवाजा खुला, लोग बाग दरवाजे पर टूट पड़े। उस कारण किसी की एक टांग अन्दर तो किसी का एक हाथ अन्दर। ऐसे मौके पर किसी ने एक नवविवाहिता के बगल में चुटकी काट ली। फिर तो हंगामा सा हो गया। उस युवती ने अपनी चप्पल हाथ में निकाल ली। इसी बीच मौका पा कर चुटकी लेने वाला युवक वहां से रफ्फूचक्कर हो गया और फंस गया पास ही खड़ा एक अधेड़। युवती ने जैसे ही उसकी तरफ इशारा किया, लोगों ने उसका कचूमर निकाल दिया। अपने हाथ पैरों की हरारत मिटाने में वह युवक भी शामिल था, जो सारी घटना का सूत्रधार था। अच्छी खासी पिटाई के बाद लोगों ने उसे छोड़ा तभी उस युवती ने बड़ी ही मासूमियत से कहा कि उसे चुटकी लेने वाला यह नहीं था। वह तो इशारा कर के यह कह रही थी कि यह वह नहीं है बल्कि इस के बाजू में खड़ा एक दूसरा आदमी था, जिस ने यह हरकत की थी।

लोगों को अपनी गलती पता चली तो उन्होंने उस व्यक्ति से माफी मांगी। मामला अपने फेवर में होते देख वह अधेड़ भी हत्थे से उखड़ गया। जैसे-तैसे मामला शांत किया गया। भगदड़ का कुछ लोगों ने फायदा उठाया और वे अंदर घुस गए। उन्हें देख कर भी लोगों ने हल्ला मचाया कि हम सुबह से लाइन में लगे हैं, क्या हम लोग बेवकूफ हैं? जैसे-तैसे लोगों को शांत किया गया।

फिर स्थानीय पुलिस चौकी से एक सिपाही की डयूटी लगाई गई। अब तो जुगाडपंती लोगों की बांछे खिल गई। बेचारा सिपाही भी सूखे की स्थिति से गुजर रहा था। उसकी भी चाय-पानी का जुगाड़ हो गया। समझदार लोग धीरे से एक दो नोट श्रध्दा अनुसार सिपाही की जेब में सरकाते हुए धीरे से अन्दर पहुँच जाते। बीच-बीच में कुछ दबंगों की दबंगई भी चल रही थी। यानि कि सब कुछ प्रजातंत्र के अनुसार हो रहा था। अब ये गोबर की किस्मत खराब थी कि बेचारे का आधार कार्ड बन नहीं पा रहा था। जुगाड़पंती और दबंगई के बीच उसकी दाल गल नहीं पा रही थी। इसी चक्कर में बेचारे को दो-चार दिन हो गए थे। रोज-रोज भीड़ का हिस्सा बनने के कारण वह थक-सा गया था।

गाँव के पास से ही हाईवे लगा था। वहाँ पर दिन में भारी वाहनों का, विशेष कर डम्परों का आना निषेध था। मगर फिर भी दिन में भी भारी वाहन यहाँ बिना रोक-टोक के चलते रहते है। इस खेल में कौन कितनी खीर खा रहा है। खोज का विषय है। इसी हाईवे के पास ही गोबर का टपरा था। रोज की तरह आधार केन्द्र से नाउम्मीद हो कर वह थके कदमों से अपनी धुन में चला जा रहा था कि एक भारी भरकम रेत के डम्पर ने उसे अपनी चपेट में ले लिया। बेचारे गोबर की असमय ही पारी समाप्ति की घोषणा हो चुकी थी।

बेचारे का नश्वर शरीर जमीन पर निश्चल पड़ा था, मगर आत्मा शरीर को त्याग कर अंतरिक्ष की ओर रवाना हो चुकी थी। आत्मा बिना किसी बाधा के ऊपर उठी जा रही थी। एक लम्बी यात्रा के बाद आत्मा यमराज के दरबार के मेनगेट पर पंहुच गई। वहां की जगमग देख कर गोबर की आँखें चुंधिया गई। वह अहमक की तरह इधर-उधर नजरें घुमाने लगा। " श्रीमान वहाँ रिसेप्शन पर जा कर सम्पर्क साधे। "एक अजीब सी पोशाक धारी द्वारपाल ने उसे टोका। उसकी आवाज सुन कर वह होश में आया। मगर वह उसकी बात समझ नहीं पाया। गोबर उल्लू की तरह नजर इधर-उधर फिराने लगा। "लगता है आप को हिंदी समझ में नहीं आई। मैं आपकी वेशभूषा से समझा था कि आप हिन्दुस्तान से आये है। तो आपको हिंदी आती ही होगी। मगर इस में आप का कोई दोष नहीं है। जब हिंदी पर बड़े-बड़े भाषण देने वाले, कविता रचने वालों के बच्चे अंग्रेजी स्कूल में तालीम पा रहे है। तब औरों से क्या उम्मीद करें। हो सकता है कि आप को मेरी अंग्रेजी समझ में आ जाये।"

मगर गोबर को न तो उसकी हिंदी समझ में आ रही थी न ही अंग्रेजी। हाँ यह समझ में जरूर आ रहा था कि वह गुस्से में गोबर को कुछ अपशब्द बक रहा था। वो क्या है कि अपशब्दों की अदायगी सभी बोलियों में एक जैसी है। अपशब्दों की लय ताल से समझ में आ जाता है कि कोई अपशब्द बोल रहा है।

गोबर उसके हाथ के इशारे एवं चेहरे की भाव भंगिमा को समझ कर एक कार्यालय की ओर बढ़ गया। उसे देख कर अन्दर बैठे बाबू ने उसे मुस्कुरा कर देखा और सामने एक कुर्सी पर बैठने

का इशारा किया। गोबर अपने आप में सिकुड़ गया। वह घबरा कर जमीन पर बैठ गया।

" अरे........ श्रीमान ये आप क्या गजब कर रहे हैं। कहीं यम देवता को पता चल गया कि हमने अपने कस्टमरों का ठीक से स्वागत नहीं किया तो हमारी नौकरी खतरें में पड़ जायेगी। आप कुर्सी पर विराजमान हो जाएं। ''डरते-डरते गोबर कुर्सी के एक कोने में दुबक गया। '' हाँ तो श्रीमान, जल्दी-जल्दी अपने लीगल डाक्यूमेंट्स पेश करो ताकि आप के मामले का अतिशीघ्र निपटारा किया जा सके। भारत सरकार की लोकसेवा गारंटी कानून से प्रेरणा ले कर यहाँ यमलोक में भी हर मामले की समय सीमा निर्धारित कर दी गई है। एक दिन में लीगल डाक्यूमेंट्स की जांच, दूसरे दिन फाइल यमराज जी के सामने पेश, तीसरे दिन फैसला कि किसे नर्क में डाला जाये या स्वर्ग में। स्वर्ग, नर्क का निर्धारण होने के बाद चौथे दिन किस को किस श्रेणी में रखा जाए। उन्हें उनके पाप, पुण्य के आधार पर सुविधा या सजा दी जाए। याने की एक सप्ताह में ही सारा काम निपटा दिया जाता है। पहले इस काम में महिनों लग जाते थे। ''

गोबर शर्म के मारे चुप रहा क्योंकि बेचारे के पास एक भी लीगल डाक्यूमेंट्स न था। यमराज महाराज के बड़े बाबू ने पूछा-'' हाँ तो आप सबसे पहले अपना वोटर कार्ड बताईये और हाँ ओरिजिनल ही दिखलाना, उसकी कलर्ड कापी नहीं चलेगी। कुछ दिनों से धरती से यह खबरें आ रही है कि कुछ बदमाश लोग कलर प्रिन्टर से नकली नोट छाप कर मार्केट में चला रहे है। ''गोबर ने हिम्मत कर के मुंह खोला-''साब जी..... मेरे पास वोटर कारड तो नहीं है। ''

बड़े बाबू नाराज हो कर बोले -'' देखो मिस्टर...... मुझे बेवकूफ बनाना इतना आसान नहीं है। ये देखो तुम्हारे नाम के आगे तुम्हारे वोटर कार्ड का नम्बर चढ़ा है। '' यह कह कर बडे बाबू ने अपने लेपटॉप की स्क्रीन को घुमा कर गोबर की ओर कर दिया। गोबर की समझ में कुछ भी नहीं आया। वह बोला कि-'' वो क्या है कि साब एक बार हमारी फोटो तो जरूर खीचीं गई थी कारड बनाने के समय, मगर जब कारड बन कर आया तो उस कारड में हमारे नाम के आगे किसी और की फोटो लगी थी। सरपंच का चुनाव था। हमारे कारड से उस व्यक्ति ने वोट डाला जिस की फोटो लगी थी। तब से हमारे कारड से दूसरा व्यक्ति ही वोट डाल रहा है।''

बड़े बाबू बोले-'' यार, ये तो बड़ी ही ब्लण्डर मिस्टेक है। खैर राशन कार्ड तो होगा ही , वही दिखलाओ।'' राशनकार्ड का नाम सुन कर गोबर बड़ा ही खुश हुआ कि चलो कुछ तो उस के पास है ही। उस ने अपना राशन कार्ड निकाल कर दिया। उस की हालत देख कर बड़े बाबू ने बुरा सा मुंह बनाया।

" अरे भाई, क्यों मेरी नौकरी चटवाने के चक्कर में हो। तुम्हारा यह कार्ड उस समय का है जब तुम एक साल के थे। और इस में तुम्हारा नाम भी पप्पू लिखा है। तुम्हारा यह राशन कार्ड नहीं चलेगा। यार तुम तो ऐसा करो, अपना आधार कार्ड दिखलाओ। वही एकदम लेटेस्ट लीगल डाक्यूमेंट् है।'' गोबर चुप रहा। बड़े बाबू बोले-''हाँ यार, कुछ उड़ती-उड़ती खबर आई है कि भारत सरकार ने आधार कार्ड बनाने का काम निजी संस्था को दिया है और उन संस्थाओं ने नौसीखिया लोगों को यह काम सौंप रखा है। वो लोग भगवती बाई को भगवान दास और कमल सिंह को कमला देवी बना रहे है। खैर अपने को क्या? आप तो अपना आधार कार्ड दिखलाओ ताकि आप के मामले का जल्द से जल्द निपटारा किया जा सके। ''

गोबर ने रो-रो कर अपने जन्म से मरन तक का किस्सा कह सुनाया। किस तरह वह आधार कार्ड बनवाने के चक्कर में यमलोक पहुँच गया। मगर आधार कार्ड नहीं बन पाया। गोबर की करूण कथा सुन कर बड़े बाबू के आँखों में भी आँसू आ गये।

''यार, ये तो तुम्हारे साथ बडी ट्रेजेडी हुई है। मगर क्या करें हम भी कानून से बंधे है। जब तक आप लीगल डाक्यूमेंट्स नहीं दिखला देते तब तक आपके केस का फैसला करना संभव नहीं है। ''

'' तब मेरा क्या होगा ? '' गोबर ने पूछा।

'' जब तक तुम उपरोक्त फार्मालिटी पूर्ण नहीं कर लेते तब तक तुम्हें अंतरिक्ष में लटके रहना होगा।'' और तब से बेचारा गोबर अंतरिक्ष में उल्टा लटका हुआ है।

ओमप्रकाश बिंजवे
स्टेशन प्रबंधक, बागरातवा
जबलपुर मंडल, पमरे
मो. 8839860350

लेख

साइबर अपराध

जैसा कि विदित है कि वर्तमान में समाज में अपराध कई रूपों में देखने को मिलते हैं। इनका रूप समय के साथ-साथ बदलता रहता है। जैसे धार्मिक भावना से देखने पर पाप और पुण्य की श्रेणी, क्षम्य और अक्षम्य अपराध वैधानिक दृष्टि से वैधानिक एवं अवैधानिक तथा कानून की दृष्टि से कानूनी गैर-कानूनी, संज्ञेय असंज्ञेय अपराध, जमानती-गैर जमानती अपराध आदि । उदाहरण की दृष्टि से -

1. आगजनी
2. हमला एवं मारपीट
3. रिश्वत खोरी
4. चोरी
5. बाल उत्पीड़न
6. जालसाजी
7. साइबर अपराध
8. नशीली दवाओं का इस्तेमाल

किसी अपराध के घटित होने के 4 चरण होते हैं

1. इरादा
2. तैयारी
3. प्रयास
4. अपराध करना

अतः स्पष्ट है कि किसी व्यक्ति द्वारा अपराध की घटनाओं को अंजाम देने के लिए सर्वप्रथम इरादा बनाना होगा फिर उसके लिए आवश्यक तैयारियाँ करनी होगी तथा कुशलतापूर्वक प्रयास करना होगा तभी किसी अपराध की घटना तक पहुँचा जा सकता है। अपराधों की कड़ी में इस डिजिटल युग में देखें तो इंटरनेट कम्प्यूटर, मोबाइल, लैपटाप, टेबलेट, स्मार्ट फोन और अन्य अनेक संचार प्रौद्योगिकी में साइबर अपराध एक संक्रामक बीमारी की तरह वैश्विक स्तर पर फैलता जा रहा है जो किसी न किसी रूप में Google, ई मेल, वाट्स एप, ट्विटर, फेसबुक, इंस्टाग्राम, एस. एम. एस. के रास्ते पहुँचकर सिस्टम को नष्ट व खराब कर देता है। जिससे किसी भी व्यक्ति विशेष निकाय एवं कम्पनी की निजता का हनन होता है। साइबर अपराध की गतिविधियों को साइबर सिस्टम में क्रियाकलाप के आधार पर अलग-अलग भाषाओं शब्दावली के रूप में जानते हैं, जिन्हें विस्तारपूर्वक उल्लिखित किया गया है।

1. साइबर बुलिंग (असभ्य, घटिया एवं तकलीफ देय संदेश।)
2. साइबर ग्रूमिंग (जाली एकाउन्ट तथा बच्चों के साथ भावनात्मक संबंध बनाना)
3. नेट वर्क गेमिंग (गेम डाउन लोडिंग के साथ फॉड ई-मेल)
4. ई-मेल फ्रॉड (फिसिंग या धोखाधड़ी) फ्रॉड ई-मेल एवं वायरस, अश्लील मैसेज, बाल यौन शोषण से सम्बद्ध)

5. ऑन लाइन लेन-देन में धोखा-धड़ी। डेबिट कार्ड, क्रेडिट कार्ड, नेटवर्किंग से संबंद्ध।

साइबरबुलिंग - साइबर बुलिंग से अभिप्राय इंटरनेट या मोबाइल टेक्नालॉजी का प्रयोग करके असभ्य घटिया व तकलीफ देय संदेश, टिप्पणियां और ई-मेल वीडियो भेजकर किसी को जान बूझकर तंग करना, डराना या धमकाना आता है। किसी साइबर बुली द्वारा दूसरों को डराने धमकाने के लिए टेक्सट मैसेज, ई-मेल, सोशल मीडिया प्लेट फार्म वेब पेज, चैट रूम आदि का प्रयोग किया जाता है। ये मैसेज ऐसे व्यक्ति द्वारा किये जाते हैं जो सोशल मीडिया प्लेट फार्म या चैटरूम, गेमिंग पोर्टल आदि पर ऑन लाइन मिले होते हैं।

साइबर ग्रूमिंग -साइबर ग्रूमिंग जाली एकाउंट बनाकर बच्चे जैसा ही व्यवहार करता है अथवा बच्चे के जैसे ही शौक रखकर गेमिंग वेब साइट, सोशल मीडिया, ई-मेल, चैट रूम, इंस्टेंट मैसेजिंग इत्यादि का प्रयोग कर सकता है तथा बच्चों के साथ भावनात्मक संबंध स्थापित कर यौन उत्पीड़न आदि का शिकार भी कर सकता है। यह भी ऐसे व्यक्तियों द्वारा किया जाता है जो सोशल-मीडिया पर हम लोगों से किसी न किसी रूप में मिले होते हैं। इसमें प्रारम्भ में मीडिया के माध्यम से प्रशंसा की जाती है तथा आपको अश्लील फोटो व चित्रों के माध्यम से आकर्षित व प्रभावित करता है तथा बाद में ऐसी अश्लील फोटो भी शेयर कराने का प्रयास करते हैं जबकि सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम 2000 के अंतर्गत अश्लील सामाग्री व बाल यौन शोषण सामग्री तैयार करना एवं प्रदर्शित करना एवं प्रचारित करना एक दण्डनीय अपराध है।

नेटवर्क गेमिंग- गेमिंग कंसोल्स कम्प्यूटर की तरह ही कार्य करते हैं, जिसमें एकाउंट बनाना होता है तथा लॉग इन करके हैंड सेट लगाकर वेब कैम अन्य यंत्रों का उपयोग करना होता है। आप केवल करोड़ों यूजर्स के साथ ऑन लाइन गेम ही नहीं खेलते हैं, बल्कि उनसे बातचीत कर अपने विचार भी साझा करते हैं। दोस्त बनाकर ग्रुप में शामिल होकर मनोरंजन करते हैं किन्तु उनके साथ जुड़े हुए जोखिम भी हैं। इसी ऑन लाइन गेम के साथ स्पैम, वायरस, द्वेषपूर्ण सॉफ्टवेयर भी डाउन लोड हो जाते हैं जो आपके कम्प्यूटर / मोबाइल – फोन व गेमिंग कंसोल को विपरीत रूप से प्रभावित करते हैं।

ई-मेल फ्रॉड (फिसिंग)- विश्व में कहीं भी मौजूद साइबर अपराधी एक सही लगने वाले जाली एकाउन्ट से आपको ई-मेल भेज सकता है। जो आपको सही प्रतीत होगा। जैसे- Customer support@gaming portal.com में आपके सारे डिटेल भरने के लिए कहा जायेगा और भरकर सभी डाटा अपराधियों को दे दिया जाता है।

ऑन लाइन लेन-देन में धोखाधड़ी- ऑन लाइन धोखाधड़ी से अभिप्राय है कि किसी साइबर अपराधी द्वारा आपके बैंक एकाउंट से गैर कानूनी रूप से पैसा निकालकर अन्य किसी तीसरे एकाउंट में ट्रांसफर करना। यह घटना उस समय घटित होती है जब आपकी सब जानकारी जैसे- बैंक एकाउंट ब्यौरा, क्रेडिट कार्ड, ब्यौरा किसी अपराधी के हाथ लग गया हो। यह तभी सम्भव है जब केडिट कार्ड, बैंक एकाउंट, कार्ड वैरिफिकेशन वैल्यू (CVV), PIN, Expiry date आदि जैसी संवेदनशील सूचना किसी साइबर अपराधी के हाथ लग गई हो।

साइबर अपराध रोकने के प्रभावी कदम-

1. कम्प्यूटर, टैबलेट एवं मोबाइल फोन के सॉफ्टवेयर को समय-समय पर अपडेट करते रहना चाहिए क्योंकि इसमें बहुत से सूक्ष्म अपडेट किसी विशेष खतरे व कमजोरी से निपटने के लिए बनाए जाते हैं।
2. मजबूत पासवर्ड का बनाया जाना आवश्यक है जिसमें संख्याओं और प्रतीकों का पूरी तरह समावेश हो।
3. केवल सत्यापित एवं विश्वसनीय अनुलग्नक ही खोले, जिससे अपराधी फिशिंग प्रक्रिया द्वारा अपराध को अंजाम न दे सके।
4 सोशल मीडिया साइट में अपनी व्यक्तिगत जानकारी को प्राइवेसी ऑप्सन (विकल्प) का चयन अवश्य अपनायें।
5. सार्वजनिक वाई-फाई से बचने का निरंतर प्रयास कायम रखें तथा सार्वजनिक नेटवर्क के माध्यम से काम करने के लिए वर्चुअल प्राइवेट नेटवर्क (VPN) का उपयोग करें।
6 सॉफ्टवेयर सिस्टम को नये खतरों से निपटने के लिए एंटीवायरस सॉफ्टवेयर प्रोग्राम व फायरवाल अवश्य समय-समय पर अपडेट करते रहें। यदि अपडेट नहीं करते हैं तो ये स्वत: सुरक्षा से वंचित रह जायेगा ।
7. मैलवेयर व रैनसमवेयर सॉफ्टवेयर, दोनों दुर्भावनापूर्ण सॉफ्टवेयर हैं जो एक साथ बहुत सारे वायरस जनरेट कर देता है तथा हर उपयोग कर्ता को लॉक कर देता है और सिस्टम की अनुपयोगी बना देता है।
8. डीडीओएस हमला-डीडीओएस हमले का उद्देश्य किसी संगठन या व्यक्ति के नेटवर्क व सर्वर को ओवर लोड़ करना होता है, जिससे अत्यधिक अवरोध एक साथ होने के कारण नेटवर्क ऑफ लाइन कर देता है।
9. साइबर अपराध से बचाव के लिए दो चरणीय प्रमाणीकरण (2FA) जैसे - OTP व फिंगर प्रिन्ट को एक्टिव करें.
10. अज्ञात लिंक और ई-मेल पर क्लिक न करें।
11. साइबर अपराधों से निपटने के लिए बनाये गये कानूनी नियम सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम 2000 (IT ACT 2000) की जानकारी भी होनी चाहिए।
12 साइबर अपराध की शिकायत राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल (https://cybercrime- gov-in) पर दर्ज कराई जा सकती है। साइबर अपराध की सजा में कैद व जुर्माना शामिल हो सकते हैं।
13. डीप फेक तकनीक (Deep fake Technology) के द्वारा हैकर्स किसी का चेहरा और आवाज कापी करके फेक वीडियो बना रहे हैं।
14. साइबर अपराध की बड़ी घटनाएं a Wanna Cry Attack (2017), यह रैनसमवेयर (ransomware) हमला 150 देशों में फैल गया और लाखों कम्प्यूटर्स को प्रभावित कर दिया ।

15. फैसबुक डेटालीक (2018) कैम्ब्रिज एनालिटिका केस में 87 मिलियन यूजर्स का डाटा लीक हुआ।
16. आधार डेटा ब्रिच (2018) भारत में 1.1 विलियन आधार डेटा रिकार्डस लीक हो गये।
17 साइबर सिक्यूरिटी टूल्स एंटीवायरस नारट्रानडब। मिम, लाच में ताल जैसे एंटीवायरस सॉफ्टवेयर यूज करें।
18 फायर वाल – विन्डोज या Mac के built in firewall को enable रखें।
19– कुछ सामान्य गलतियाँ जिनसे बचना चाहिए जैसे weak passwords '12346' या password जैसे simple पासवर्ड प्रयोग नहीं करना है।
20 Public Wi & Fi पर बैंक डिटेल्स या Personal data access न करें।
21 अपना OTP किसी भी व्यक्ति के mobile, laptop, Internet से शेयर न करें।
22. अपने सभी Account के पासवर्ड समय–समय पर चेंज करना सुनिश्चित करें।
23. साइबर क्राइम हेल्प लाइन (जैसे भारत में 1930) पर रिपोर्ट करें।
24 अपने Important Data का Regular back up लेते रहें ताकि ransomware जैसे सॉफ्टवेयर, डेटा को Corrupt न कर सके।
25 मिलते – जुलते e-mail addres को सही ढंग से समझकर ही जानकारी sent करें या जानकारी शेयर करें। जल्दी बाजी में इस प्रकार की त्रुटियों की काफी सम्भावना रहती है जिस पर ऐतिहात रखने की आवश्यकता है। इस प्रकार से डिजिटल डेटा को सॉफ्टवेयर सिस्टम में सुरक्षित रखने हेतु उपर्युक्त दिशानिर्देशों का पालन अवश्य करें ताकि बढ़ते साइबर अपराधों को रोका जा सके।

हरी शंकर मिश्र
सीनियर सेक्सन इंजीनियर/यांत्रिक
मुख्यालय, पमरे, जबलपुर
मोबाइल – 9752415432

कविता — जीवन झरने जैसा पानी

जीवन झरने जैसा पानी,
बचपन, बुढ़ापा और जवानी
अच्छी लगती बचपन की रवानी
मस्त बेफिक्र एकदम अनजानी
याद आती बचपन की शैतानी
उधम खेल तमाशे किए मनमानी
दादा–दादी, नाना–नानी की कहानी
नटखट भोलापन की नहीं थी सानी
जीवन झरने जैसा पानी,
बचपन, बुढ़ापा और जवानी
बचपन बीता जब आयी जवानी
मस्त अंदाज कुछ करने को ठानी
मेहनत लगन कर्म की पहिचानी
पुराने नए दोस्तों की जिन्दगानी
ठोकर और नए रास्तों की कहानी
भूली–बिसरी अनजानी यादें पुरानी
कुछ खोने–पाने की चाह में बीती जवानी
जीवन झरने जैसा पानी,
बचपन, बुढ़ापा और जवानी
जवानी की चौखट पर बुढ़ापे का आन
सफेद बाल जर्जरता और आयी थकान
नयी–नयी बिमारियों से नित नए पहचान
मस्त अल्हड़ अंदाज गया रहा न अरमान
समझौते का सफर शुरू हुआ न रही कोई शान
जीवन झरने जैसा पानी,
बचपन, बुढ़ापा और जवानी
फिक्र यही इस काया में कायम रहे बस जान
अपने छूटने लगे नहीं रखा पुराने रिश्तों ने मान
अनुभव और सीखों की पोटली बांट रहे श्रीमान
हर जीवन की कमोबेश है यही कहानी
जीवन झरने जैसा पानी,
बचपन, बुढ़ापा और जवानी

देश बन्धु पाण्डेय 'दिव्य'
मुख्य कार्या. अधीक्षक
मडिमका, कोटा, पमरे
मो. 9694005489

लेख

मुझे वापस जाना था

"आस्ते भग आसीनस्य।" 'ठहरे हुए व्यक्ति का भाग्य भी ठहर जाता है। 'लक्ष्मणगिरी महाराज ने कहा। ट्रेन कटनी–साउथ स्टेशन से चल चुकी थी। 'पर क्या मैं कभी अपने मन की वेदनाओं, संभ्रम तथा अस्थिरता के परे जा पाऊंगी ?', युवती ने पूछा।

'तुम्हारे मन की चंचलता तुम्हारे मार्ग की प्रशस्ती नहीं होने देती, पर ये कार्य इतना कठिन नहीं है जितना तुमने बना लिया है। तुमने अपने को इस मन की अवस्था में यूँ उलझा लिया है कि तुम्हारी समग्र अभिव्यक्ति स्थूल होती जा रही।' महाराज ने कहा। तरूणी कुछ समय मौन रही, खिड़की से बाहर देखते हुए कुछ सोचती रही।

फिर बोली, 'अच्छा महाराज, वो कोई रेलवे वाले साहब हैं, ब्यौहारी स्टेशन पे, वो आपके शिष्य हैं क्या ?' । महाराज हल्की मुस्कान के साथ बोले, 'शिष्य तो नहीं है, क्योकि उनकी बातों में दार्शनिकता... , खैर छोड़ो बेटी अभी तो समय नहीं है इस विषय का, मेरा स्टेशन आ रहा है। तुम्हारा कल्याण हो' ।

'कभी मुझे आपसे बात करनी हो तो कहां मिलना होगा महाराज ?' किशोरी ने पूछा।

'तुम्हारा नाम क्या है बेटी ?'महाराज ने पूछा।

'संध्या' किशोरी ने जवाब दिया।

'कुछ माह मैं ब्यौहारी में गोदावल धाम में रहूँगा बेटी,' महाराज ने कहा।

'मनुष्य का सबसे बड़ा लक्ष्य आजादी है बेटी,' कहते हुए महाराज सिहोरा–रोड स्टेशन पर उतर गए। संध्या खिड़की के बाहर देखते हुए सुबह की घटना के बारे में सोचने लगी। आज वो सुबह भंवरसेन से बस में बैठ के ब्यौहारी रेलवे स्टेशन के लिए निकली थी, जनवरी माह का प्रथम सप्ताह ही था, ठंड और कुहासा चरम पर थे, उसे मुंशी प्रेमचंद की कहानी, 'पूस की रात' के हल्कू और जबरा याद आ रहे थे। ठंड से वो शॉल में खुद को लपेट कर जल्दी ब्यौहारी स्टेशन पहुंचने की आस में थी। बस सुबह साढ़े सात बजे पर्सेली रिसॉर्ट के पास से गुजरती हुई चमराडोल नाम के छोटे से स्थान पर पहुंची। वहां एक छोटे–सी दुकान पर चाय नाश्ते के लिए बस के चालक ने बस रोक दी।

ठंड में चाय को कौन अनदेखा कर सकता है, उसकी दादी भी कहती है कि 'पेट में अन्न हो तो ठंड कम लगती है' । ये सोचते हुए संध्या बस से नीचे उतरी।

दुकान के चारों तरफ खेत थे, सरसों के पीले फूल कोहरे से ढ़की धरती की सुंदरता को और मनोरम बना रहे थे। संध्या चाय का कप लेकर खेतों के बगल में बने एक चबूतरे पर बैठ कर इस सुहावनी बेला में थोड़ा रोमांचित हो रही थी। गर्म चाय पीते हुए वो आनंदित महसूस कर रही थी, पर एक आवाज ने उसका आनंद भंग किया।

'गुप्ता जी समोसे कितनी देर में निकल जाएंगे, आज रात्रि जागरण हुई है ठंड में भूखे' बोलता हुआ एक युवक अपने बैग में कुछ तलाश रहा था। बैग से उसने सारा सामन बाहर निकाल दिया था, जिसमें एक डायरी और एक किताब भी थी।

'क्या हुआ प्रभात बाबू, आज तो आप पे ठंड का असर दिख रहा है चाय पियो तब तक समोसे भी बन जाएंगे, बैग को क्यूँ खाली कर रहे ?' दुकानदार ने पूछा। 'सिगरेट की डब्बी नहीं मिल रही लगता है कहीं गिर गई है, आज 'मार्लबोरो' की जगह 'नेवीकट' ही पीना पड़ेगा। लाओ चाय के साथ नेवीकट का डब्बा दे दो, ब्यौहारी पहुंचने से पहले रास्ते में जरूरत पड़ेगी, ब्यौहारी में भी 'मार्लबोरो' बड़े मुश्किल से ही मिलती है' युवक ने कहा। युवक चाय लेकर और सिगरेट जला कर एक कुर्सी पर बैठ गया।

'आपके साहब बड़े दिन से आए नहीं हैं कहा हैं वो आजकल ?' दुकानदार ने पूछा। 'साहब तो फकीर आदमी हैं, गए है हिमाचल प्रदेश के किसी 'कसोल' नाम की जगह घूमने ' युवक ने जवाब दिया तभी एक बलेरो कार उस दुकान पर आकर रुकी, कुछ लोग उस कार से उतर कर दुकान में आ गए तो युवक भी खड़ा हो कर उनसे बातें करने लगा। संध्या चाय पी चुकी थी,थोड़ी देर बाद उसकी बस अब ब्यौहारी के लिए चल चुकी थी।युवक भी थोड़ी देर बाद समोसे खा कर अपनी मोटरसाइकिल से ब्यौहारी के लिए निकला।

शक्तिपुंज एक्सप्रेस दिन के तीसरे पहर जबलपुर स्टेशन पर

आकर रुक गई। संध्या का भी ध्यान सुबह की घटना से हटा और वो ट्रेन से उतर कर प्लेटफॉर्म की एक बेंच पर बैठ गई। उसे अपने घर, जहां वो अपनी सहेली के साथ रहती है, जाने का मन नहीं हो रहा था, आज के दिन वो अकेले रहना चाहती थी। आज के दिन के बारे में आत्मविमर्श करना चाहती थी। मन में कुछ बैचेनी और कुछ उत्साह भी था। थोड़ी देर बाद वो भेड़ाघाट की बस में बैठ गई। भेड़ाघाट पहुंच कर एक भिखारन को कुछ पैसे देने के बाद धुंआधार झरने के पास एक पत्थर पर बैठ गई।

आज की घटना उसे विशिष्ठ जान पड़ती थी। वो आज के प्रसंग के बारे में पुनः विचार करने लगी। उसकी बस ब्यौहारी के रास्ते में जंगल के बीच सुंदर बनास नदी के पुल पर आकर बंद पड़ गई, ड्राइवर एवं उसका सहयोगी बस को ठीक करने में प्रयासरत थे, बस से उतर कर संध्या उस मनोरम दृश्य का आनंद लेने लगी एवं अपने मोबाइल से तस्वीरें खींचती रही। बनास नदी के पुल पर युवक भी थोड़ी देर में पहुंचा,वह अपनी मोटरसाइकिल रोक कर सिगरेट जला कर उस मनोरम दृश्य को निहारने लगा। पीछे से संध्या ने आवाज दी, 'आपको परेशानी न हो तो क्या आप मुझे ब्यौहारी रेलवे स्टेशन छोड़ देंगे, मेरी जबलपुर की ट्रेन 9 बजे है, और मेरी बस खराब हो गई है', बस की तरफ इशारा कर के संध्या ने कहा । 'मैं जा तो ब्यौहारी ही रहा हूँ, पर इस जंगल में आप किसी अंजान पे क्यूँ भरोसा कर के मोटरसाइकिल से जाना चाहती हैं, बस के बाकी यात्री भी तो बस के ठीक होने का इंतजार कर रहे, ट्रेन पकड़ना इतना जरूरी है क्या ?' युवक ने कहा।

'इतना जरूरी भी नहीं पर आप रेलवे वाले हैं और सरकारी नौकरी वाले पर इतना तो भरोसा कर सकते हैं। संध्या ने जवाब दिया। 'चलिए बैठिए मोटरसाइकिल पर, रास्ते में इस बात पे तर्क कर लेंगे कि सरकारी नौकरी वाले पे कितना भरोसा कर सकते हैं' कह कर युवक ने मोटरसाइकिल चालू कर ली, संध्या पीछे बैठ गई। युवक मोटरसाइकिल को तेजी से चलने लगा। 'आपको कैसे पता मैं रेलवे में नौकरी करता हूँ ?' युवक ने पूछा। 'आप अभी दुकान पर चाय पी रहे थे, वहां मैं भी थी, भारत सरकार, रेलवे लिखी एक कार वहां आई तो आप उस गाड़ी के लोगों से बात करने लगे, इसलिए मुझे ऐसा लगा' । संध्या बोली। 'आप की नजर तो अच्छी है मैडम, वैसे आप आ कहां से रही है ? ' युवक ने पूछा।

'भंवरसेन, जानते हैं आप उस जगह को ?' संध्या ने पूछा। 'हां, गया हूँ मैं कई बार वहां, एक पुराना सुंदर सा चंद्रेह मंदिर और मठ है और सोन एवं बनास नदियों का संगम है, अच्छी जगह है। मेरे साहब ले गए है मुझे। ' युवक बोला। 'वो मंदिर 972 ईस्वी का बना है और वहाँ एक और नदी का संगम है, त्रिवेणी है वो जगह। आपके साहब ने बताया होगा ?' संध्या ने कहा। 'आप जानती है मेरे साहब को ?' युवक ने कहा। 'फकीर है, कही हिमाचल घूमने गए है आजकल।' संध्या ने मुस्कराते हुए कहा।

'दूसरों की बातें सुनना तो किसी भी किताब में अच्छा नहीं कहा गया है, ' युवक ने हंसते हुए जवाब दिया। 'चित्रलेखा नाम की जो किताब आपके बैग में पड़ी है, उसमें तो अच्छाई और बुराई को ही परिभाषित करने की असफल कोशिश की गई है', संध्या ने कहा।'पाप और पुण्य की व्याख्या करने की कोशिश है, पर आपको ये भी पता है कि ये किताब मेरे बैग में है, आप मेरा नाम भी जानती होंगी तब तो।' युवक ने कहा।

'प्रभात बाबू, जानती तो हूँ ' संध्या ने कहा। 'कहते है जंगलों में चुड़ैले बस्ती हैं, मुझे आपके पैर सीधे हैं या उल्टे ये देख लेना था। आपको बैठाने से पहले' युवक ने कहा। 'अब गलती तो हो गई है आपसे, ब्यौहारी स्टेशन पर उतर कर ही आपके मन को शांति मिलेगी, वैसे लड़कियों के पैर देखना भी तो सभ्य लोगों को कहाँ शोभाता है ' संध्या ने कहा। 'इस जंगल में कोई साहित्य प्रेमी मिलेगा ऐसा मैंने भी नहीं सोचा था, मुझे भी आपके पैर देख लेना था, कहीं आप भी। ' हंसते हुए संध्या आगे बोली। 'आप को डरने की जरूरत नहीं, साहित्य प्रेमी फकीर साहब हैं, मुझे उन्होंने साहित्य और यायावरी का रस नया-नया ही चखाया है उनके पैर तो मैं भली भांति देख चुका हूँ।' मुस्कराते हुए प्रभात ने कहा।

जब वो ब्यौहारी स्टेशन पहुंचे, ट्रेन प्लेटफॉर्म पर आ चुकी थी। 'टिकट भी लेना है मुझे' संध्या ने कहा। 'टिकट लेने में ट्रेन छूट जाएगी, चलिए मैं आपको किसी परिचित के साथ बिठा देता हूँ, आगे के स्टेशन खन्ना बंजारी में टिकट भिजवा दूंगा।' युवक बोला। दोनों भागते हुए प्लेटफॉर्म पर पहुंचे, युवक ने प्लेटफॉर्म पे स्थित एक कार्यालय को दिखा कर बोला, 'मैं इसी कार्यालय में कार्य के लिए आता हूँ। सफेद वस्त्र धारण किए एक योगी महाराज को रोक कर युवक ने प्रणाम किया और बोला 'महाराज जी आप इन्हें साथ ले जाए, आगे स्टेशन पर इनका टिकट भिजवा दूंगा' । फिर संध्या की तरफ देख कर बोला, ' ये लक्ष्मणगिरी महाराज है, मेरे साहब की इनसे बड़ी विषयों पर चर्चा होती है, उनके साथ आप ट्रेन में बैठा जाएं।'संध्या ट्रेन में बैठ

गई, ट्रेन जबलपुर के लिए चल दी।

कुछ देर बाद प्रभात ने अपने किसी परिचित को खन्ना बंजारी में फोन किया एवं लक्ष्मणगिरी महाराज की कोच और सीट की जानकारी दी और एक युवती के लिए जबलपुर की टिकट खरीद कर देने को बोल दिया। परिचित ने युवती का नाम पूछा तो प्रभात भी एक पल के लिए मौन रह गया, नाम तो उसने पूछा ही नहीं। ट्रेन में महाराज ने कहा, 'कहाँ कि रहने वाली हो बेटी और जबलपुर किस प्रयोजन से जा रही हो' ? मैं वहां एक छोटी–सी नौकरी करती हूँ, साथ ही एक सहेली के साथ रह कर प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रही हूँ पर महाराज मैं बड़ी दुविधा में जी रही हूँ, समाज ने स्त्री को बाहर निकालने की स्वतंत्रता तो दे दी, पर स्त्रियां इस अपूर्ण स्वतंत्रता में बहुत ज्यादा उलझ गई हैं, जड़ काटते जायें पानी देते जायें वाली स्थिती दिखती है।' संध्या ने कहा। महाराज कुछ विचार कर के बोले, 'तुम तो विचारशील और तार्किक जान पड़ती हो बेटी, पढ़ाई के साथ कुछ हद तक जीवन को भी आत्मसात् किया है तुमने। पर तुम्हारी खोज तर्क के बल पूर्ण नहीं होगी।' कुछ सोच कर बोली,' मैं ब्यौहारी की रहने वाली हूँ, पर ज्यादातर पढ़ाई मैंने जबलपुर में ही की है महाराज'

धुंआधार के पास बैठे सांझ हो चली थी, संध्या तेजी से बस की तरफ बढ़ी, जबलपुर पहुंच कर उसने कुछ खरीदारी की और रेलवे स्टेशन आ गई। शक्तिपुंज एक्सप्रेस से वापस ब्यौहारी जाने का मन उसने साध लिया था। आज का दिन उसे अदभुत जान पड़ता था, आज ही तीन लोगों का कुछ प्रभाव उसे छू गया था एक मतवाला सा युवक, एक योगी और एक कोई अपरिचित। वो आज की घटनाओं में ही डूबी ट्रेन में सो गई। सुबह के 2 बजे ट्रेन ब्यौहारी में खड़ी थी, सही समय पर मोबाइल फोन के अलार्म ने उसे ब्यौहारी उतार दिया।

प्लेटफॉर्म पर ही उसे लक्ष्मणगिरी महाराज मिले, वो भी उसी ट्रेन से वापस आ गए थे। प्रणाम कर के संध्या ने उनके हाथ में एक किताब एवं एक जल की बोतल पकड़ा कर कहा,'भाग्य अच्छा है मेरा, ये नर्मदा माँ का जल आपके लिए जबलपुर से लेती आई थी, सोचा था आपके आश्रम में आकर दूंगी, पर ये अवसर यहीं मिल गया'। महाराज के जाने के बाद संध्या वेटिंग हाल में जा कर एक बेंच पर सो गई।

सुबह स्टेशन पर लोगों की आवाजाही बढ़ी तो संध्या की आँखें खुली, वो वेटिंग हाल से बाहर आकर, प्लेटफॉर्म पर प्रभात के कार्यालय की तरफ बढ़ चली। प्रभात कार्यालय के बाहर ही खड़ा किसी से बातें कर रहा था, संध्या को देख कर खुशी से बोल उठा, 'आज फिर आपको शक्तिपुंज एक्सप्रेस पकड़नी है, पर आज आप अपने मित्र की मोटरसाइकिल की यात्रा नहीं कर पाईं, दुर्भाग्य!' 'दुर्भाग्य किसका मित्र का या मेरा', वो हंसते हुए बोली।

'दुर्भाग्य तो युवकों का ही माना जाएगा, किसी से भी पूछ लीजिए, पर शायद भंवरसेन छोड़ने का सौभाग्य भी प्राप्त हो जाए।' प्रभात बोला। 'चलिए चाय का ग्लास हाथ में लेकर इस पर विचार करते हैं', संध्या मुस्करा कर बोली। गोदावल तिराहे पर एक चाय की दुकान पर प्रभात संध्या को ले के गया। चाय पीते हुए प्रभात ने कहा, 'आपने कल एक गलती की थी' 'वो क्या ?'

'मैं सरकारी कर्मचारी नहीं, प्राइवेट कंपनी में कार्यरत हूं, मेरी कंपनी के इलेक्ट्रॉनिक्स उपकरण रेलवे स्टेशनों पर लगे हैं उसका ही कार्य देखता हूँ।' प्रभात बोला। 'एक गलती आपने भी आज कर दी' संध्या बोली। 'वो क्या' ?

'मैं भंवरसेन नहीं जाऊंगी, मेरा घर ब्यौहारी में ही है, एक रिश्तेदार के घर किसी उत्सव में गई थी, वहीँ से सुबह की ट्रेन पकड़ने आ गई थी, मेरे परिवार के लोग भी वहीं थे, पर आज वो सुबह ब्यौहारी आ गए होंगे।' संध्या मुस्करा कर बोली। 'मैंने कहा था कि दुर्भाग्य तो युवकों का ही होता है, देखिए अभी सिद्ध हो गया,' प्रभात बोला। सिगरेट का पैकेट वो अपनी जेब से निकाल कर जलने को हुआ तभी संध्या बोल उठीं,' भाग्य तो अभी भी आपके साथ है, देखिए ये मार्लबोरो का पैकेट मैं आपके लिए जबलपुर से लिए आई, आपको नेवीकट नहीं पीना पड़ेगा'बैग से

मार्लबोरो सिगरेट का पैकेट निकाल कर मुस्कराते हुए संध्या ने प्रभात के हाथ में थमा दिया। 'कहते हैं चुड़ैल आपके पीछे लग जाए तो पीछा छुड़ाने किसी सिद्ध के पास जाना पड़ता है, आप भी कल से मेरे पीछे पड़ गईं हैं' प्रभात बोला। 'ये आंकलन कैसे किया आपने?', संध्या ने हंसते हुए कहा। 'अब सिगरेट तो कोई लड़की किसी को देगी नहीं, आप तो अलग ही लोक की लगती हैं, अपने पैर दिखा ही दीजिए अब', हंसते हुए प्रभात ने कहा। चाय पीने के बाद प्रभात संध्या को ब्यौहारी में उसके घर के पास तक मोटरसाइकिल पर छोड़ने चला।

रास्ते में 'आपके साहब कब आ रहें ब्यौहारी ?' संध्या ने पूछा। 'क्यूँ उन्हें भी सिगरेट की भेंट देनी है क्या' प्रभात हंसते हुए बोला। 'सिगरेट तो हम लोग जिनके पीछे पड़ते हैं उन्हें ही देते है, पर उनके लिए भी कुछ लाई थी मैं' कहते हुए संध्या रुक गई। 'अच्छा शाम को लक्ष्मणगिरी महाराज के गोदावल धाम तक चलना होगा ' संध्या आगे बोली। 'वहां किस प्रयोजन से जाना है?', प्रभात ने पूछा। 'किसी सिद्ध से ही तो आपके पीछे पड़ी परलोकी आत्मा से मुक्ति मिलेगी, आपने ही तो कहा था' हंसते हुए संध्या बोली। प्रभात भी मुस्कुराता हुआ संध्या को घर छोड़ कर अपने घर की तरफ बढ़ चला।

विश्व प्रकाश
सीनियर सेक्शन इंजीनियर
(सिग.एवं दूरसंचार)
जबलपुर मंडल
मो. 9752418847

गज़ल — देखा है आपको

है अगर इबादत, दिन-रात की मेहनत,
सफर में नींद पूरी करते हुए देखा है आपको..

है अगर हिजरत, महकमे की खिदमत,
वालिदेन ने अक्सर, नाराजगी से देखा है आपको..

है अगर जरूरी, शब-रोज की मशरूफियत,
अहले-खाना के शिकवे, मुबारक हो आपको....

है अगर जिम्मेदारी, औलाद की तरवियत,
सुकरात की तरह जहर पीते हुए देखा है आपको...

'सहर' तो कायल है आपकी फरमाबरदारी का, क्योंकि
तमाम उम्र कंधों पर घर लेकर चलते हुए देखा है आपको...

विवेक कुमार गुप्ता "सहर"
उप मु. सिग. एवं दूर. सं. इंजी.
मुख्यालय, पमरे, जबलपुर
मो. 9752415808

गज़ल

एक ही फूल नहीं जीवन में, कांटे भी स्वाकार करो
चाहे सुख हो चाहे दुख हो इन सब का सत्कार करो

सद गुण सदा चरण तप करूणा धर्म परायण अनुशासन
ये गहने है मानवता के इनको अंगीकार करो

क्यों आये हम इस धरती पर क्या उद्देश्य हमारा है
क्या करना था क्या कर बैठे कुछ तो सोच विचार करो

झूठ कपट छल लालच का फल अक्सर कड़वा होता है
सच का फल मीठा होता है इस फल का आहार करो

अपनाये पश्चिम के दुर्गुण सद्गुण अपने भूल गये
सब कुछ करना लेकिन अपनी संस्कृति के अनुसार करो

कंम्प्यूटर के युग में तुमने कितने नव निर्माण किये
एक रहें सब नेक बनें कोई ऐसा आविष्कार करो

सोने की चिड़िया कहलाता है "मैराज" वतन अपना
अपना वतन फिर अपना वतन है अपने वतन से प्यार करो

मैराज 'जबलपुरी'
शायर, जबलपुर
मो.: 8317360088

लेख

नव वर्ष

साल 2025 का आगाज हो रहा है। बता दें कि दुनियाभर में 01 जनवरी से नए साल की शुरुआत मानी जाती है। अंग्रेजी कैलेंडर के अनुसार चूंकि नया साल वर्ष के पहले दिन को दर्शाता है, जो कि जीवन में खुशियां लाने वाला माना जाता है। इसे ऐसे भी समझा जा सकता है कि हम पिछले वर्ष को पीछे छोड़ते है तथा नए साल में यह दिन एक नई शुरुआत का प्रतिनिधित्व करता है।

नए साल की पूर्व संध्या हर देश और हर व्यक्ति के लिए एक विशेष अवसर है। नया साल हमें नई परियोजनाएं शुरू करने के लिए प्रेरित करता है और हमें अपना जीवन नए उत्साह और आनंद के साथ जीने की ऊर्जा देता है। नए साल में हम पिछले साल की अपनी गलतियों से सीखते हैं, नया संकल्प या शपथ लेते हैं और पूरी ऊर्जा के साथ अपने काम को पूरा करने में लग जाते हैं, जिससे हमें सफलता मिलती है। यह एक त्योहार के समान है जो हमारे अंदर नई ऊर्जा स्थापित करता है, जिससे हमारे जीवन में नए साल का महत्व बढ़ जाता है।

वैसे तो अंग्रेजी कैलेंडर या ईसाई धर्म के कैलेंडर के अनुसार पूरी दुनिया एक जनवरी को नया साल मनाती है, लेकिन भारत एक ऐसा देश है जहां एक जनवरी के अलावा भी कई बार नया साल मनाया जाता है। ऐसे में चलिए जानते हैं कि हमारे विविधताओं वाले देश में किस धर्म में कब नया साल मनाया जाता है और नये साल की क्या प्रथा है

हिंदु धर्म में नववर्ष : हिंदुओं के नए साल की शुरूआत चैत्र शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि से होती है और हिंदू नव वर्ष का पहला त्योहार होता है चैत्र नवरात्रि और गुड़ी पड़वा। धार्मिक मान्यताओं अनुसार यह वही दिन है जब ब्रह्मा जी ने सृष्टि की रचना की थी। ऐसा कहा जाता है कि इसी दिन प्रभु श्रीराम एवं धर्मराज युधिष्ठिर का राज्याभिषेक भी हुआ था। पौराणिक मान्यताओं अनुसार चौत्र नवरात्र के प्रथम दिन पर ही देवी ने ब्रह्माजी को सृष्टि की रचना करने का कार्यभार सौंपा था इसलिए यह दिन समस्त जगत के आरंभ का दिन माना जाता है। देवी भागवत पुराण के अनुसार, इस तिथि पर ही देवी मां ने सभी देवी–देवताओं के कार्यों का बंटवारा किया था। इसी वजह से चैत्र नवरात्र से हिंदू वर्ष का आरंभ माना जाता है।

ईस्लाम धर्म में नववर्ष : ईस्लामिक नये साल की शुरुआत मोहर्रम के महीने से होती है. आपको बता दें कि ईस्लामिक न्यू ईयर की डेट हर साल बदलती रहती है, ईस्लामिक कैलेंडर, अंग्रेजी कैलेंडर की तुलना में लगभग 11 दिन छोटा होता है। ईस्लामिक कैलेंडर में 354 या 355 दिन होते हैं। मुहर्रम को ईस्लामिक साल का पहला महीना माना जाता है जो रमजान के बाद दूसरा सबसे पवित्र और पाक महीना होता है।

हजरत उमर जो ईस्लाम के दूसरे खलीफा थे उन्होने कैलेंडर की शुरुआत एक महत्वपूर्ण वर्षगांठ पर की थी। इस्लामिक कैलेंडर पूरी तरह हिजरी पर आधारित है। हिजरी का आगाज उमर फारुख के दौर में हुआ। हजरत अली की राय से ये तय हुआ था। इस्लाम धर्म के आखिरी संदेश वाहक हजरत मोहम्मद साहब, शहर मक्का से मदीना जाने को हिजरत कहा जाता है इसीलिए इस समय से हिजरी सन को इस्लामी वर्ष का आरंभ माना गया। इस तरह हजरत उमर ने अली और हजरत उस्मान गनी के सुझाव पर ही मोहर्रम को हिजरी सन् का पहला महीना तय किया। जिसके बाद से दुनिया भर में मुस्लिम मोहर्रम को ईस्लामी नव वर्ष की शुरुआत मानते हैं।

सिख धर्म में नववर्ष : सिख समुदाय के लिए बैसाखी का दिन खास महत्व रखता है। दरअसल, इसी दिन से सिख नव वर्ष की शुरुआत होती है। बता दें कि अलग–अलग राज्यों में बैसाखी को अन्य नामों से भी जाना जाता है। असम में इसे 'बिहू', बंगाल में 'पोइला बैसाख' जैसे नामों से जाना जाता है। इसी तरह इस दिन बिहार में सत्तूआन का पर्व मनाया जाता है। बैसाखी को 'बसोआ' भी कहते हैं। कहते हैं कि बैसाखी के ही दिन सिखों के दसवें और आखिरी गुरु गोबिंद सिंह जी ने 1699 को खालसा पंथ की स्थापना की थी। इस दिन गुरु गोबिंद सिंह जी ने सभी लोगों को मानवता का पाठ पढ़ाया और उच्च व निम्न जाति समुदायों के बीच के अंतर को खत्म करने का उपदेश दिया। सिख धर्म से जुड़ी मान्यताओं के मुताबिक, बैसाखी के मौके पर आनंदपुर साहिब की पवित्र भूमि पर हजारों की संख्या में संगत जुटी थी, जिसका नेतृत्व गुरु गोबिंद सिंह जी कर रहे थे। उन्होंने कहा कि धर्म और राष्ट्र की रक्षा के लिए मुझे पांच बंदों की जरूरत है, जो अपने बलिदान से धर्म की रक्षा करने में सक्षम हों। तब धर्म और राष्ट्र की रक्षा के लिए अपना शीश भेंट करने के लिए पांच प्यारे उठे। कहते हैं कि सबसे पहले इन्हें ही खालसा का रूप दिया गया था।

बौद्ध धर्म में नववर्ष : बौद्ध धर्म में नए साल का दिन सौर वर्ष के मुताबिक होता है, जो तब होता है जब सूर्य मेष राशि में प्रवेश

करता है। यह दिन आम तौर पर अप्रैल, मई या जून में आता है। बौद्ध धर्म के सबसे महत्वपूर्ण त्योहारों में से एक वैशाख, बुद्ध जयंती, बुद्ध पूर्णिमा या बुद्ध दिवस को इसी दिन मनाया जाता है. यह त्योहार गौतम बुद्ध के जन्म, ज्ञान प्राप्ति, और मृत्यु का प्रतीक है, बौद्ध धर्म से जुड़ी कुछ और खास बातें निम्नानुसार है–

- बौद्ध धर्म की नींव चार आर्य सत्य और अष्टांगिक मार्ग पर आधारित है।
- बौद्ध धर्म के अनुसार, मनुष्य का जीवन का लक्ष्य निर्वाण प्राप्त करना है।
- बौद्ध धर्म की शिक्षाओं में अहिंसा, सत्य, चोरी न करना, व्यभिचार न करना, मद्य (शराब) का सेवन न करना, असमय भोजन न करना, सुखप्रद बिस्तर पर न सोना, धन संचय न करना शामिल हैं।

जैन धर्म में नववर्ष : जैन धर्म में नववर्ष, दिवाली के अगले दिन से शुरू होता है। इसे वीर निर्वाण संवत कहते हैं। मान्यता है कि दीपावली के दिन ही भगवान महावीर स्वामी को मोक्ष प्राप्ति हुई थी। इस दिन से ही जैन धर्म के अनुयायी नया साल मनाते हैं। वीर निर्वाण संवत के बारे में कुछ और बातें निम्नानुसार है–

वीर निर्वाण संवत, कालानुक्रमिक गणना की सबसे पुरानी प्रणालियों में से एक है। इसकी शुरुआत 07 अक्टूबर, 527 ईसा पूर्व से हुई थी। जैन पंचांग, हिंदू पंचांग की तरह चंद्र–सूर्य पर आधारित है। जैन वर्ष को वीर निर्वाण संवत और विक्रम संवत को जोड़कर प्राप्त किया जाता है।

इस प्रकार विविधता में एकता के प्रतीक नव वर्ष को भारत वर्ष में विभिन्न समुदायों द्वारा सोहार्दपूर्ण वातावरण में बड़े हर्षोउल्लास के साथ मनाया जाता है।

मजहर खान
कार्यालय अधीक्षक, संरक्षा विभाग
मुख्यालय, पमरे, जबलपुर
मो. 9584090901

कविता

भारतीय संस्कृति की अनूँठी मिशाल है हिंदी

अ से ज्ञ तक का ज्ञान कराती हिंदी,
साहित्य का ज्ञान हमें कराती हिंदी।

हिंदी विषय निराला है,
हिंदी बनी विशाला है।

स्वर और व्यंजनों का मेल है हिंदी,
जीवन की परिभाषा हिंदी।

सरस, सरल, मधुर है हिंदी,
जन–जन को जोड़े हिंदी।

कवियों की पहचान है हिंदी,
लेखक की परिभाषा हिंदी।

हिंदी है हम सब की भाषा,
हिंदी है हिन्दुस्तान की भाषा।

संस्कृति का ज्ञान कराती हिंदी,
नव जीवन का संचार कराती हिंदी।

राजकाज की भाषा हिंदी,
संपर्क की भाषा हिंदी ।

अपनों को अपनों से जोड़े वह भाषा है हिंदी,
कितनी, अलग, कितनी अनोखी भाषा है हिंदी।

अपनत्व जुड़ा है हिंदी से,
माँ की तरह नाता है हिंदी से।

आओ हिंदी का सम्मान करें हम,
हिंदी का गुनगान करें हम।।

श्रीमती वसुंधरा पंकज तिवारी
हिंदी साहित्यकार
दमोह, जबलपुर मंडल
मो. 8770690497

हिंदी की होड़ किसी प्रांतीय भाषा से नहीं केवल अंग्रेजी से है – डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

कहानी

पैरों के छाले

सेठ खुशमिजाज सिंह हंसी-खुशी अपनी जिंदगी के पैतालीस बरस बिता चुके थे। उनके उम्र के इस पड़ाव तक उन्हें कभी भी कोई भी परेशानी, शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक पीड़ा का सामना नहीं करना पड़ा। कारण यह था कि विरासत में उन्हें इतनी दौलत मिली थी कि उसी के बल पर उनकी और उनके परिवार की देखभाल होती रही। उन्हें स्वयं अपने शरीर की देखभाल के लिये कभी भी मशक्कत नहीं करनी पडी और ना कभी बच्चों की पढ़ाई या परिवार के कामकाज निपटाने की कभी चिंता करना पड़ी। चौबीस घंटे नौकर-चाकर उनके आगे-पीछे घूमते रहते लेकिन कोरोना वायरस की वसुंधरा में दुखद आगमन पर जब सारा विश्व सिंहर उठा तब सेठ खुशमिजाज सिंह को इस त्रासदी ने खासा प्रभावित कर दिया, शायद यह उनके जीवन में पहली बार हुआ है। जब सामाजिक दूरी (सोशल डिस्टेंडिंग) की बात आई तो धीरे-धीरे नौकर-चाकर उनके रोजमर्रा के होने वाले कार्यों से किनारा करने लगे। अब उनकी मदद के लिए कोई सहारा ना बचा था। लिहाजा वक्त को देखते हुये वो अपना कार्य खुद ही करने लगे।

कोरोना संक्रमण से बचने के लिए बताये गये जरूरी उपायों का पालन वो धीरे-धीरे सीखने लगे। शरीर की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के वास्ते सुबह पैदल चलना शुरू कर दिया थोड़ी बहुत शारीरिक व्यायाम भी आरंभ कर दिया। सुबह पैदल चलने के कारण पैरों में पीड़ा महसूस होने लगी। मामूली छालों के उभार उनकी मानसिक स्थिति में तूफान-सा खड़ा करने लगे। उन्होंने डॉक्टर से सम्पर्क किया, डॉक्टर उपलब्ध नहीं हो पाये। हाँ! डॉक्टर की सुझाई दवा का इस्तेमाल उन्होंने चालू किया लेकिन मन की बेचैनी शांत नहीं हुई। लिहाजा डॉक्टर के दवाखाने जाना ही उचित समझा।

जब भी वो दवाखाने पहुंचते उन्हें डॉक्टर के दर्शन ना होते। जब भी पूछते, यही उत्तर मिलता। डॉक्टर साहिब कोरोना पीड़ितों की मदद के लिये गये हैं। अपने पेरों के मामूली छालों को बड़ी समस्या समझकर उन्होंने मन बना लिया कि मैं अब दवा वहीं कराऊंगा जहाँ डॉक्टर साहिब दूसरों लोगों का इलाज कर रहे हैं।

सेठ खुशमिजाज सिंह आज जल्द ही तैयार हो गये और डॉक्टर साहब के पीछे-पीछे अपनी गाड़ी से चलने लगे। जैसे ही सेठ जी अपनी गाड़ी से उतरे तो नजारा देख उनके चक्षु फटे के फटे रह गये। यह क्या कोरोना काल में हुये लाकडाउन के कारण हजारों पुरुष, महिलाएं, बच्चे, हजारों कि. मी. यात्रा करके अपने घरों को जा रहे हैं। इस कारण मजदूरों के पैरों पर पड़े छालों के कारण पांव के साथ-साथ सड़क भी लहुलुहान हो गयी है। छालों की गहराई इतनी अधिक है कि वारिध भी अचंभित है। आँसुओं की धारा इतनी प्रबल है कि नदियों ने कभी ऐसी बाढ़ नहीं देखी थी। सेठ जी के पैरों के तले जमीन खिसक गई और जमीन खिसकने से उनके पेरों के छोटे-मोटे जख्म ना जाने कहां गायब हो गये। डॉक्टर साहब उन सभी की मरहम पट्टी करने में इतने खो गये कि उन्हें पता ही नहीं चला कि सेठ जी घंटों से उनके पीछे ही खड़े हैं।

सेठ जी के अंदर का असली मानव जाग गया। वो डॉक्टर साहब से बिना कुछ वार्तालाप किये उल्टे पैर वापिस आ गये। ना भुलाते हुये भी मजदूरों के पैरों के गहरे गहरे छाले उनकी आँखों से ओझल नहीं हो पाते। महिलाओं की फटी साड़ी और फटे पल्लू से अपने संतान को लपेटे रखना, रोना बिलखना, बीच बीच में मजदूरों की भूख से मृत्यु, रात भर ऐसे दृश्य किसी चलचित्र की भांति देखते रहे। पहली बार सेठ जी आज की रात नहीं सोये थे।

सेठ जी अपना सब कुछ भूल चुके थे। सुबह झटपट तैयार होकर वो डॉक्टर साहिब के साथ हो लिये। डॉक्टर साहब दिनभर मरहम पट्टी करते रहते और सेठ जी भूखे मजदूरों को खाना खिलाते रहते।

राजेश कुमार लखेरा
सीनियर सेक्शन ईंजीनियर (टेली)
जबलपुर मंडल, पमरे
मो. 9752418829

लेख

राष्ट्रीय ध्वज के निर्माण की कहानी

बच्चों, तुम्हें पता है भारत का राष्ट्रीय ध्वज कैसे बना ? आज हम राष्ट्रीय ध्वज के निर्माण के बारे में बात करेंगे। इन दिनों हम अपने देश की आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं तो हमें राष्ट्र गान और राष्ट्रीय ध्वज के निर्माण के बारे में भी ज्ञात होना चाहिए। भारत के तिरंगे झंडे में तीन रंग क्यों हैं ? बीच में चक्र का क्या अर्थ है ? यह किस कपड़े से बनता है ? इसके बनाने के क्या नियम हैं ? यह सब जानना आवश्यक है। इन सब बातों को जान कर ही इसके महत्व को समझ सकेंगे। राष्ट्रीय ध्वज के प्रति आदर का भाव जाग्रत होगा।

''जी गुरु जी, हम भी जानना चाहते हैं कि राष्ट्रीय ध्वज का निर्माण कैसे हुआ ? दिल्ली के लाल किले से प्रधानमंत्री जी जब भाषण देते हैं तो लहराता हुआ तिरंगा अच्छा लगता है। कृपया हमें बताइए कि हमारा राष्ट्र ध्वज जो भारत देश की शान का प्रतीक है। उसके निर्माण में किन-किन की भागीदारी रही है ''? ''बच्चों, तिरंगे के लिए रंगों का चुनाव करने की एक अलग कहानी है। तीन रंग की क्षैतिज पट्टियों के बीच नीले रंग के चक्र से सुशोभित ध्वज की कल्पना मछली पट्टनम के पिंगली वैंकैया जी ने की थी तिरंगे के निर्माण से लेकर राष्ट्रीय ध्वज बनने तक की यात्रा में उसने कई स्वरूप बदले हैं। तिरंगे से पहले पांच और झंडे स्वतंत्रता आंदोलन के प्रतीक थे। सबसे पहले 7 अगस्त 1906 में भारत का राष्ट्रीय ध्वज सामने आया। जिसे स्वामी विवेकानन्द जी की शिष्या निवेदिता ने डिजाइन किया था। इसमें हरे, पीले और लाल रंग की पट्टियां थी। हरे रंग की पट्टी में आठ कमल के फूल, लाल रंग की पट्टी में चांद, सूरज और बीच में पीले रंग की पट्टी में वंदे मातरम् लिखा था। इसे कलकत्ता के पारसी बागान चौक में आंदोलनकारियों ने फहराया''।

दूसरी बार मैडम भीका जी कामा ने इसमें कुछ बदलाव किए। जिसे क्रांतिकारियों ने वर्ष 1907 में फहराया था। इसमें आठ कमल के बजाय एक कमल के फूल को स्थान दिया। बीच में वंदे मातरम् नारा लिखा था। इसके बाद सन् 1917 में इसमें तीसरा बदलाव हुआ। जिसमें पांच लाल और चार हरी क्षैतिज पट्टियां लगाई थीं। अंदर सप्तर्षि के सात तारे, एक कोने में अर्द्धचंद्र सितारे के साथ डिजाइन किया था। बायीं ओर यूनियन जैक का झंडा था। इसे कांग्रेस कमेटी की अध्यक्षा श्रीमती एनी बेसेंट के निर्देशन में लोकमान्य तिलक द्वारा तैयार कराया था। जिसे स्वराज आंदोलन में फहराया गया था।

इसके बाद चौथा परिवर्तन झंडे में उस समय हुआ, जब बंगाल के बंटवारे से आक्रोशित जन मानस ने गांधी जी के नेतृत्व में विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार कर दिया। स्वदेशी वस्तुएं अपनाने के लिए आंदोलन चलाया। जिसमें स्वराज की मांग की गई थी। इसके लिए केसरिया रंग की क्षैतिज पट्टी और सफेद रंग की पट्टी में स्वराज आंदोलन के प्रतीक चरखे को स्थान दिया। उसके नीचे हरी पट्टी। इन तीन रंगों के बीच में चक्र का निशान था। यह सन् 1921 में बना। पांचवे परिवर्तन में बीच में चक्र के स्थान पर चरखा था। अंत में सन् 1931 में छठवें परिवर्तन में पुनः अशोक चक्र लगाया गया। जिसमें समय की प्रतीक 24 तीलियां हैं। संविधान सभा ने इसे राष्ट्रीय ध्वज घोषित किया।

15 अगस्त 1947 को प्रथम स्वतत्रंता दिवस के के अवसर पर यह तिरंगा फहराया गया। तभी से यही तिरंगा हमारा राष्ट्रीय ध्वज है। जिसकी अगुवाई में हम स्वतंत्रता समारोह आयोजित करते हैं, खुशियां मनाते हैं। इसके निर्माण में पिंगली वैंकैया जी का महत्वपूर्ण योगदान है। गांधी जी की मुलाकात वैंकेया जी से दक्षिण अफ्रीका में हुई थी। उस समय उन्होंने अपना एक अलग राष्ट्र ध्वज होने की बात कही। गांधी जी को उनका प्रस्ताव पसंद आया। उन्होंने वैंकेया जी को ही राष्ट्र ध्वज निर्माण का दायित्व सौंपा। वैंकेया जी भारत आए तो उन्होंने राष्ट्र ध्वज बनाने के लिए कई राष्ट्र ध्वजों का अध्ययन किया ।

इस बृहद् कार्य में पांच वर्ष लगे। तब इसका प्रारूप अंतिम रूप ले सका। राष्ट्रीय ध्वज का निर्माण करने के लिए उनके साथ एस.बी.बोमान और उमर सोमानी सहयोगी बने। वैंकेया जी ने पहले हरे और लाल रंग की दो पट्टियों से ही इसका निर्माण किया था। इस झंडे में गांधी जी को राष्ट्र की संपूर्ण एकता का भाव अनुभव नहीं हुआ। उसमें ऊपर लाल रंग, नीचे हरा और बीच में सफेद रंग की पट्टी लगाई गई थी। बीच में नीले रंग का अशोक चक्र लगाने का सुझाव दिया था। झंडे में रंगों को ले कर काफी चर्चा हुई। सन् 1931 में कांग्रेस कमेटी ने इस ध्वज को स्वीकार किया। सन् 1947 में यही राष्ट्र ध्वज स्वतंत्र भारत का प्रतीक बना।

जय हिंद। वंदे मातरम्।

डॉ. रघुराज सिंह 'कर्मयोगी'
वरिष्ठ हिंदी साहित्यकार एवं
सेवानिवृत सहायक मंडल यांत्रिक इंजी.
कोटा मंडल, पमरे
मो. 8003851458

लेख

समय की मांग है अपने को अपडेट रखें

आज के समय में जो हम दस हजार रूपये का मोबाइल लेते हैं तो वह भी हर 3–4 महीने में अपडेट मांगता है। हम उसे अपडेट करते हैं क्या यह जरूरी नहीं कि हमें भी यदि तरक्की करना है ऊंचा उठाना है तो अपने आप को भी अपडेट करना होगा। यदि कोई एक 20 हजार रूपये का व्यक्ति नौकरी पर रखते हैं। तो उसके बारे में भी दस बार सोचते हैं। उसका इंटरव्यू लेते हैं फिर तो यह जीवन है। हमें जितने ऊपर जाना है। जितना ज्यादा पैसा कमाना है, उतना ज्यादा प्रश्न उत्तर जीवन में आएंगे। उनका सामना करना पड़ेगा और यदि हम जीवन में ज्यादा कुछ कमाना चाहते हैं। तब हमें अपडेट होना ही पड़ेगा तभी हम जीवन में कुछ कर सकते हैं, पैसा कमा सकते हैं और जमाने में सब के बीच में रह सकते हैं।

आज के वैज्ञानिक युग में देखा जाए तो प्रत्येक व्यक्ति को अपडेट होना अति आवश्यक है, फिर भले ही वह अपग्रेड अपने आप को करें, अपनी दुकान को अपग्रेड करें, अपने देश को अपग्रेड करें या फिर अपनी कंपनी को अपग्रेड करें। अक्सर यह देखा गया है कि बहुत से दादा–दादी, नाना–नानी अपने आप को बच्चों के मुताबिक अपडेट नहीं कर पाते। उनके बीच में उम्र का एक अच्छा खासा गैप बन जाता है। जिस कारण से वह बच्चों से दूर होते चले जाते हैं और अकेलेपन का जीवन निर्वाह करने के लिए उन्हें मजबूर होना पड़ता है। यदि वह भी थोड़ा बहुत इंटरनेट सीख लें थोड़ी बहुत कहानी सुनाना सीख ले थोड़ा–थोड़ा अपडेट हो जाए तो उनका जीवन का बच्चों के साथ प्रसन्नता पूर्वक गुजरेगा, क्योंकि आज के सारे बच्चे मोबाइल और एप की दुनिया में जीवन जी रहे हैं। और बच्चे भी चाहते हैं कि उनके पैरेंट्स उनके दादा–दादी उन्हें नये हिसाब से कंप्यूटर और मोबाइल के माध्यम से किस्से–कहानी सुनाएं वीडियो दिखाएं जिससे वह जल्दी अपडेट हो सके ।

यदि आप बिजनेस कर रहे हैं, नई कंपनियां खोल रहे हैं । या आपकी पुरानी दुकान है। तब भी आपको आधुनिक टेक्नोलॉजी को लेकर कार्य करना ही होगा अन्यथा आपका प्रोडक्ट मार्केट में फेल हो जाएगा उसे उतनी जल्दी सफलता नहीं मिलेगी और यदि आपको सफलता समय पर ना मिल पाई तो आपको निराशा होना स्वाभाविक है। मुझे एक छोटा–सा उदाहरण याद आ रहा की एक जमाने में भले ही, कोई नेता हो एबिजनेस मैन हो, बड़े–बड़े पोस्ट पर बैठा हुआ व्यक्ति हो। वह सभी लोग एंबेसडर कार को चलना और खरीदना पसंद करते थे। लेकिन एंबेसडर कार को हिंदुस्तान मोटर द्वारा अपडेट नहीं किया गया उसका नतीजा यह हुआ कि आज यह गाड़ी सड़कों से दूर जा चुकी है। उसे उसके मालिक को बंद करना पड़ा क्योंकि आज मार्केट में अपडेट होकर एक से एक कार बाजार में मौजूद है। इसी प्रकार जो देश पुराने धर्रे पर कुरीतियाँ और अंधविश्वासों पर चलता है। अपने यहां आधुनिक हथियार आधुनिक टेक्नोलॉजी और नई चीज लेकर नहीं आता तो उस देश की भी आमदनी उसकी जीडीपी गिरना चालू हो जाती और वहां के नागरिक निम्न दर्जे का जीवन जीने के लिए मजबूर होने हो जाते हैं।

इसी प्रकार प्रत्येक कर्मचारी को भी समय के अनुसार अपने आप को अपग्रेड करते रहना चाहिए। यदि हमने अपने आप को अपग्रेड नहीं किया तो वह समय बहुत जल्दी आएगा जब आपका विभाग यह विचार करेगा कि इस व्यक्ति से कुछ नहीं होता और इस व्यक्ति की अब हमें आवश्यकता नहीं है। क्योंकि यह पुराने जमाने पर चल रहा है, इसके विचार बहुत पुराने हैं और इसको लेकर हम आगे नहीं चल सकते हैं। आगे हमारी कंपनी की हमारे विभाग की उन्नति नहीं हो सकती है। इसलिए अब इनको घर भेजना ही उचित होगा। मेरा यह व्यक्तिगत मानना है कि प्रत्येक कर्मचारी को आज का जो परिवेश है फिर भले ही इंटरनेट की दुनिया हो, नई–नई वेबसाइट हो, ई–मेल हो, गूगल हो, एच. आर.एम.एस.हो, आर ई एम. एस, मेडिकल विभाग के ऐप हो या आपके डिपार्टमेंट की ऐप हो। आपको सब कुछ सीखना पड़ेगा और आपको अपने नॉलेज को अपडेट रखना होगा। तभी आप अपने अधिकारी के, अपने बॉस की नजरों में रह सकते हैं। अन्यथा वह दिन दूर नहीं जब आपको भारी परेशानियों का सामना करना पड़ सकता हैं। सरकारी विभाग में अक्सर यह देखा गया कि व्यक्ति अपने घर के सारे काम कर लेता है। वह उसे बहुत अच्छे से आते हैं। भले ही घर बनवाने का काम हो, वह एक से एक नई टेक्नोलॉजी लेकर अपना घर बनाता है। नई टेक्नोलॉजी की मोटरसाइकिल खरीदेगा, नई टेक्नोलॉजी की कार खरीदेगा और नए प्रकार के मोबाइल खरीदेगा। वह सब बड़े शौक से चलाना सीख जाता है । लेकिन यदि उसे कुछ नहीं आता तो वह सरकारी काम क्योंकि उसे मालूम है कि यहां पर एक बार आ गए तो अब हम 60 साल पर ही घर जाएंगे । लेकिन ऐसा नहीं है समय बदल रहा है दुनिया बदल रही है। इसलिए आपको भी बदलना पड़ेगा नहीं तो समय आपको बदल देगा।

अपने आप को आप इस प्रकार से अपडेट रख सकते हैं। नई जानकारी और नई खोज के बारे में हमेशा अग्रसर रहें और नई को खोजते रहे। अपने आप को अपडेट रखने के लिए यूट्यूब इंटरनेट पर मोटिवेशन के बहुत सारी वीडियो है। उन्हें आप देखकर अपडेट हो सकते हैं। जो व्यक्ति समय के साथ चलता है। वह बड़े बड़ों को मात दे सकता है। यदि हम समय के साथ नहीं चले तो हमें समय पीछे धकेल देगा। समय को पहचाने और अपडेट रहें। महान व्यक्तियों द्वारा लिखी हुई पुस्तकें पढ़कर अपने आप को अपडेट कर सकते हैं। अपने मित्रों, रिश्तेदारों, बच्चों से भी ऑनलाइन या साथ रहकर मदद लेकर आप अपडेट हो सकते हैं। अपडेट रहने के लिए आप हमेशा प्रयासरत रहें। यही आपको उज्जवल भविष्य की ओर ले जाएगा।

मनोज सेन
संरक्षा सलाहकार (विद्युत)
मुख्यालय, जबलपुर
मो. 9752415662

कविता

नया बरस..

अब के बरस भी किस्से बनेंगे कमाल के,
पिछला बरस गया है कलेजा निकाल के
लिखूंगा एक दिन इस सफर ने मुझ से क्या-क्या छीना है,
जनवरी को क्यूँ बदनाम करूँ ये तो सिर्फ एक महीना है..!!
अरे किसे सुनाऊँ जो बीती मुझ पर, कौन यहां पर अपना है,
दुख हकीकत, हमदर्दी दिखावा और खुशियाँ सिर्फ सपना है..
माना कि जिंदगी से बहुत प्यार है मगर,
कब तक रखोगे काँच का बर्तन संभाल के..!!
कोई जज्बात नहीं अपने ही अरमान लिखेंगे,
हसीन-ए-आलम नहीं, अपने ही हालात लिखेंगे,
बहुत शिकायत है, हमें तुझसे-ऐ-जिंदगी,
अब तेरे बारे में भी एक किताब लिखेंगे,
लिखते-लिखते खत्म ना हो जाए ये जिंदगी
एक ही शब्द में पूरी कायनात लिखेंगे..!!

देवराज चांपागई
कार्यालय अधीक्षक, वाणिज्य विभाग
मुख्यालय, पमरे, जबलपुर
मो. 7701082990

रेल नियम

प्लेटफॉर्म गर पड़े बदलना
पुल का ही उपयोग करें
लाइन क्रॉस कभी न करना
बच्चों दुर्घटना से डरना
रेल लाइन को करना पार
ये है कानूनन अपराध
क्यों जीवन खतरे में डालें
क्यों व्यर्थ की टेंशन पालें
रेल नियम का करे उल्लंघन
जो भी करता लाइन पार
पुलिस पकड़ लेती है उसको
फिर जुर्माने की उस पर मार
बच्चों पढ़े-लिखे हम सारे
करें नियम से सारे काम
कोई काम करें न ऐसा
व्यर्थ में हों जाएं बदनाम
खुद समझें, औरों को बताएं
रेल नियम हम सब अपनाएं
कभी ना करना , लाइन पार
पुल से ही जाना , हर बार

सलीम 'स्वतंत्र'
लोको पायलट, कोटा मंडल
मो. 9001015278

निबंध

भारतीय रेलः परिवहन व्यवस्था का मेरुदण्ड

(क्षेत्रीय स्तर पर आयोजित 'अखिल रेल हिंदी निबंध प्रतियोगिता वर्ष 2024' में प्रथम पुरस्कार से पुरस्कृत निबंध)

परिचय– भारतीय रेल माल और यात्री परिवहन का प्राथमिक साधन है। यह भारत में सामाजिक, आर्थिक तथा राजनैतिक रूप से उनके क्रियाकलापों में महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान करती है। सामरिक दृष्टि से भारतीय रेल परिवहन व्यवस्था की जीवन रेखा है।

रेलवे बोर्ड के भूतपूर्व अध्यक्ष श्री करनैल सिंह जी के अनुसार, 'रेलें वास्तव में जीवन रेखा के समान है, यह भारत के यात्रियों तथा संपत्तियों का इस प्रकार प्रवाह करतीं हैं, जिस प्रकार मानव शरीर में रक्तवाहिनी नाड़ियों रक्त का प्रवाह करती हैं।'

सामाजिक एवं आर्थिक सेवाओं का मुख्य घटक होने के साथ–साथ यह एशिया की दूसरी सबसे बड़ी रेलवे एवं विश्व की चौथी सबसे बड़ी रेलवे है। अनुमान है कि अगले पाँच वर्षों में यह विश्व की तीसरी सबसे बड़ी रेलवे होगी, जिसका वैश्विक बाजार में 10% हिस्सा होगा।

आर्थिक परिदृश्य :– बेहतर सार्वजानिक परिवहन सुविधाएं एवं उपलब्ध संसाधन; उत्पादन केन्द्रों एवं बाजारों तक अनिवार्य संपर्क मुहैया कराते हुए आर्थिक विकास में मदद करते हैं। भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (CAG) 2023 की रिपोर्ट के के अनुसार रेलवे को यात्री सेवाओं से कुल 68,269 करोड़ रूपये का भारी नुकसान हुआ है, जिसकी भरपाई माल ढुलाई से होने वाले लाभ से की जानी थी। भारतीय रेलवे द्वारा पिछले कुछ वर्षों की राजस्व वृद्धि दर भी कुछ संतोषजनक नहीं है जिसे निम्न ग्राफ में दर्शाया गया है।

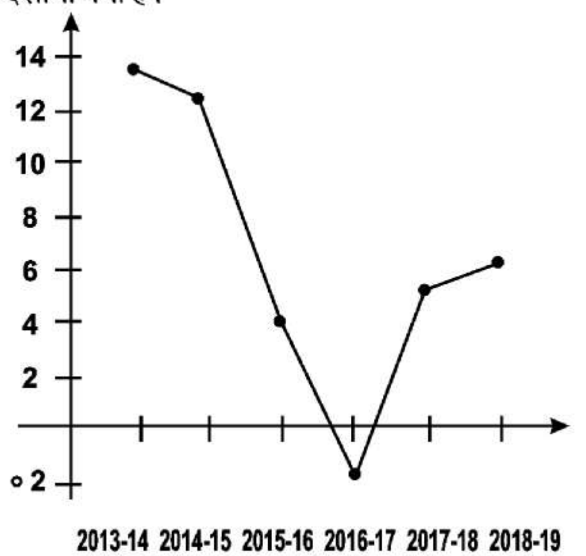

बढ़ते कर्ज के बावजूद भी पूंजीगत व्यय में उल्लेखनीय वृद्धि इस विश्वास पर आधारित है कि रेलवे के क्षेत्र में निवेश का विनिर्माण, सेवाओं, कर राजस्व तथा रोजगार के अवसर में बेहतर वृद्धि कर सकता है।

यात्री एवं रेल परिवहन सेवाएं:– रेल परिवहन सेवाएं लगभग 68,000 कि.मी. की दूरी तय करने वाली 13,000 ट्रेनों के माध्यम से लगभग प्रतिदिन 24 मिलियन यात्रियों को यात्रा कराती है। सामान्यतः सार्वजनिक परिवहन सुविधाएं 'पॉकेट फ्रेंडली' होती है, जिसके माध्यम से नौकरियों, सेवाओं तथा आर्थिक गतिविधियों तक लोगों की पहुंच एवं व्यवसायों की पहुँच उत्पादकता में वृद्धि लाती है। ज्ञात है कि भारत में पहली यात्री ट्रेन 16 अप्रैल 1853 को मुम्बई से थाणे के मध्य चलाई गई।

माल परिवहन सेवा के माध्यम से प्रतिदिन 3.3 मिलियन टन माल का परिवहन होता है। जो देश की आर्थिक अवसंरचना को सुदृढ़ करता है। रेले प्रतिदिन कोयला, दूध, सीमेण्ट, खाद्यान्न, लौह–इस्पात, पेट्रोलियम, डाक, कपड़ा, जूट, सैनिक एवं असैनिक उपकरण, सड़क परिवहन के साधन एवं विभिन्न प्रकार के आवश्यक उपकरणों का निर्बाध परिवहन करती है। ज्ञात है, पहली माल गाड़ी 1836 में मद्रास की लाल पहाड़ी से चिंताद्रिपेत पुल तक चलाई गई थी।

भारतीय रेल के महत्व एवं लाभः– रेलवे परिवहन का न केवल एक सस्ता माध्यम है बल्कि पर्यावरण प्रदूषण के नियंत्रण एवं सुलभ सुविधा का महत्वपूर्ण साधन है। रेलवे के इलेक्ट्रिफिकेशन से कार्बन उत्सर्जन में कमी आई है। रेलवे के माध्यम से ग्रामीण तथा शहरी जीवन में समन्वयता देखने को मिली। बेहतर रोजगार के अवसर प्राप्त हुए। उद्योगों का विकास हुआ। कीटनाशक एवं बीज की उपलब्धता से कृषि में उन्नति हुई। वैश्विक बाजार में प्रतिस्पर्धा उत्पन्न हुई। निर्यात में वृद्धि हुई। वस्तुओं की उपलब्धता के पारगमन समय में कमी आई। विभिन्न स्थानों पर मूल्य में समता देखी गई। डाक सेवा एवं सैनिक सेवा प्रदान कर सकी। ज्ञात है कि 1907 से रेलवे में डाक सेवा की शुरुआत हुई।

भारतीय रेलवे द्वारा स्थापित प्रतिमानः– यूनेस्को द्वारा दार्जिलिंग हिमालयन रेलवे, नीलगिरी माउंटेन रेलवे तथा कालका – शिमला रेलवे को संयुक्त रूप से 'माउंटेन रेलवे' का दर्जा देकर विश्व धरोहर की सूची में शामिल किया गया है। चौथी रेलवे महाराष्ट्र की माथेरान हिल रेलवे है, जिसे यूनेस्को ने विश्व धरोहर की अस्थाई सूची में शामिल किया है। रेल मंत्रालय एवं भारत सरकार ने लगभग भारत के 960 स्टेशनों पर सौर पैनलों की

स्थापना की है, जिससे बनने वाली बिजली से रेलवे को सहायता प्राप्त होती है। भारत का पहला निजी रेलवे स्टेशन हबीबगंज, जो अब रानी कमलापति के नाम से प्रसिद्ध है।

भारतीय रेलवे के लिए परियोजनाएं:- भारतीय रेलवे के लिए रेल मंत्रालय एवं भारत सरकार ने समय-समय पर कई योजनाएं लाए हैं -जिसमें से कुछ निम्नलिखित हैं-

- 1 अगस्त 1947, को यात्री बीमा योजना,
- स्वर्णिम चतुर्भुज योजना द्वारा रेलवे लिंक,
- महाराष्ट्र, गोवा, कर्नाटक व केरल के मध्य 760 कि.मी. लंबी कोंकण तट रेलवे ।
- पुणे-नासिक के मध्य 235 कि.मी. सेमी हाई स्पीड रेल कॉरिडोर।
- रक्सौल (भारत)-काठमाण्डु (नेपाल) के मध्य रेल समझौता
- दुर्घटना बचाव हेतु आपरेशन रक्षा कवच ।
- दुर्घटना राहत हेतु समपार फाटक पर प्रतिबंध ।
- गतिशक्ति नीति के तहत PM गतिशक्ति।
- भारतीय रेल योजना 2030- जिसकी लक्ष्य माल परिवहन को 45% तक बढ़ाना है।
- चिनाब नदी पर विश्व का सबसे ऊँचा रेलवे पुल ।

भारतीय रेल की नवीनता:- डिजिटलीकरण, औद्योगीकरण, एवं कम्पूटरीकरण, निजीकरण एवं तकनीकीकरण के माध्यम से भारतीय रेल गतिशीलता की ओर अग्रसर है। इसके माध्यम से कम्प्यूटरीकृत टिकटिंग, जी. पी. एस. आधारित ट्रेन ट्रेकिंग, माल परिवहन हेतु ई-कॉमर्स प्लेटफार्म, शिकायत हेतु रेल मदद प्लेटफार्म, स्टेशनों का पुनर्विकास, कोचों का नवीनीकरण आदि संभव हो सका है। भाप इंजन, कोयला इंजन, डीजल इंजन, इलैक्ट्रिक इंजन के बाद अब रेलवे मैग्नेटिक लेविटेशन की ओर अग्रसर है। यह जापान, जर्मनी जैसे देशों से तकनीकी ग्रहण कर मेट्रो, बुलेट एवं वंदे भारत जैसे प्रोजेक्ट लाया है।

निष्कर्ष: सामाजिक संपर्क, राजनैतिक गतिशीलता एवं वाणिज्यिक गतिविधि को सक्षम करने के साथ-साथ भारतीय रेल ने विभिन्न प्रकार से अपने आप को सुदृढ़ किया है।

दीक्षा सोनी
सहायक तकनीशियन
गा.प्र. एवं वाता./भोपाल
पश्चिम मध्य रेलवे
मो. 8299801545

गीत

होली गीत

उमर बराबर तोरी मोरी ....?

ये री गोरी अंखियां तोरी, बात करत है चोरी चोरी ।
तबियत मोरी थोरी-थोरी चोर बनन को चाहत गोरी।।
का तारीफ करौं मैं तोरी, लग रही गोरी चंद्र चकोरी।
ले गई नींद उड़ा के मोरी, चाल बड़ी मतवारी तोरी।।
तैने डारी प्रीत की डोरी, सुना-सुना के मन की लोरी।
चढ़ रहो रंग बसंती गोरी, बात करे क्यों कोरी-कोरी।।
बनी लाग न बिगरै ओ री, मत ज्यादा बन इतनी भोरी।
कमजोरी ना मुझमें गोरी, उमर बराबर तोरी मोरी।।

ललन प्रसाद विश्वकर्मा
से.नि.कार्या. अधीक्षक (इंजी.)
पमरे, जबलपुर
मोबा. 9407078968

कविता

'हिंदी'

सुमधुर भाषा प्यारी हिंदी।।
सरल सुलेख हमारी हिंदी।।
दिलों को जोड़ती न्यारी हिंदी।
संस्कृति संजोती दुलारी हिंदी।।
गद्य काव्य को भाती हिंदी।
मन के भाव बताती हिंदी।।
जन जन की भाषा हिंदी।
अखंडता की आशा हिंदी।।
हिंदुस्तान का श्रृंगार है हिंदी ।
संस्कृति व संस्कार है हिंदी ।।
हिंदी दिलों को जोड़ती है।
सरलता की ओर मोड़ती है।।
इसमें भावों की उच्चतम अभिव्यक्ति है।
देश की एकता अखंडता की शक्ति है।।
हिंदी एक सूत्र में पिरोने वाली भाषा है।
हिंदी में स्पष्ट अक्षर, शब्द व परिभाषा है।।
हिंदी पर गर्व और अभिमान है।
हिंदी से सांस्कृतिक पहचान है।।

राकेश कुमार रजक
सीनियर सेक्शन इंजी.
भोपाल मंडल
मो. 9893251546

राजभाषा वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तरी

1. हिंदी के प्रयोग-प्रसार में सर्वोत्कृष्ट योगदान हेतु राजभाषा विभाग, रेलवे बोर्ड द्वारा प्रदत्त सर्वोच्च पुरस्कार है –

क) राजभाषा गौरव पुरस्कार

ख) राजभाषा कीर्ति पुरस्कार

ग) कमलापति त्रिपाठी राजभाषा स्वर्ण पदक

घ) रेल मंत्री राजभाषा स्वर्ण पदक

2. किसी कैलेंडर वर्ष में दिए गए समितियों की बैठकों की संख्या के संबंध में असंगत है–

क) केंद्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति – 2 बैठक

ख) हिंदी सलाहकार समिति – 2 बैठक

ग) क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति – 4 बैठक

घ) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति – 2 बैठक

3. किस राजभाषा नियम/अधिनियम/संकल्प द्वारा हिंदी के साथ अंग्रेजी को भारत संघ की सह-राजभाषा का दर्जा प्रदान किया गया –

क) राष्ट्रपति के आदेश, 1960

ख) राजभाषा अधिनियम, 1963

ग) राजभाषा संकल्प, 1968

घ) राजभाषा नियम, 1976

4. राजभाषा आयोग की सिफारिशों की समीक्षा करने हेतु गठित संसदीय राजभाषा समिति के अध्यक्ष थे –

क) श्री ओम मेहता ख) श्री जी. बी. पंत

ग) श्री बी. जी. खेर घ) श्री एच.एम. पटेल

5. राजभाषा अधिनियम को भारत गणराज्य के कौन से वर्ष में संसद द्वारा अधिनियमित किया गया ?

क) 12 वें वर्ष ख) 13 वें वर्ष

ग) 14 वें वर्ष घ) 15 वें वर्ष

6. गृह मंत्रालय के तत्वावधान में हिंदी शिक्षण योजना के अंतर्गत संचालित विभिन्न हिंदी भाषा पाठ्यक्रमों की पहचान करें तथा हिंदी में ज्ञान के स्तर के आधार पर उन्हें आरोही / बढ़ते क्रम में उपयुक्त विकल्प का चयन करें –

क) प्रवीण, प्राज्ञ, प्रबोध, पारंगत

ख) प्राज्ञ, प्रवीण, प्रबल, प्रकांड

ग) प्रबोध, प्रवीण, प्राज्ञ, पारंगत

घ) प्रबोध, प्रवीण, प्राज्ञ, प्रकांड

7. यदि केंद्रीय सरकारी कार्यालय में कार्यरत किसी कर्मचारी पर तामील किए जाने वाले अनुशासनिक कार्यवाहियों से संबंधित कोई आदेश या सूचना उसे अंग्रेजी में दी जाती है, तो कर्मचारी द्वारा उक्त आदेश या सूचना की मांग हिंदी में किए जाने पर कितने दिनों के भीतर आदेश या सूचना का हिंदी अनुवाद उपलब्ध कराया जाना अपेक्षित है ?

क) असम्यक विलम्ब के बिना

ख) 15 कार्यालयीन दिवस

ग) 25 कार्यालयीन दिवस

घ) 30 कार्यालयीन दिवस

8. किसी राज्य के उच्च न्यायालय द्वारा दिए गए निर्णय, डिक्री या आदेश में अनिवार्य रूप से प्रयोग की जाने वाली भाषा होगी –

क) अंग्रेजी सहित हिंदी एवं उस राज्य की राजभाषा

ख) अंग्रेजी एवं हिंदी

ग) अंग्रेजी

घ) हिंदी सहित राज्यपाल के प्राधिकार से जारी उस राज्य की राजभाषा

9. राजभाषा अधिनियम, 1963 की कौन सी धारा के असंगत/प्रतिकूल आदेश राष्ट्रपति द्वारा जारी नहीं किए जा सकते हैं –

क) धारा 3 ख) धारा 4

ग) धारा 5 घ) धारा 6

10. निम्नलिखित में से किस राज्य पर राजभाषा नियम, 1976 लागू नहीं होता है –

क) आंध्रप्रदेश ख) केरल

ग) तमिलनाडु घ) कर्नाटक

11. राजभाषा की दृष्टि से 'क' क्षेत्र में शामिल राज्यों तथा संघ शासित प्रदेशों की संख्या है –

क) 08 तथा 03 ख) 09 तथा 02

ग) 02 तथा 09 घ) 09 तथा 03

12. राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3 (3) में निर्दिष्ट दस्तावेजों का हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में जारी करवाने का उत्तारदायित्व है –

क) हस्ताक्षरकर्ता अधिकारी का

ख) संबंधित विभाग प्रमुख का

ग) संबंधित कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का

घ) प्रस्तुतकर्ता कर्मी का

13. असंगत कथन का चयन करें–

क) पहली बार वर्ष 2006 में 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस के रूप में मनाया गया।

ख) संघ की राजभाषा हिंदी स्वीकार किए जाने के अवसर पर वर्ष 2024 में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा हीरक जयंती मनाई गई।

ग) विज्ञापनों को हिंदी एवं अग्रंजी में प्रकाशित किया जाना अनिवार्य है, क्योंकि ये राजभाषा अधिनियम 1963 धारा 3(3) के अंतर्गत उल्लेखित दस्तावेज हैं।

घ) संविधान की आठवीं अनुसूची में कुल 22 भाषाओं का उल्लेख किया गया है।

14. अधिसूचित कार्यालयों में पदस्थ निम्नलिखित स्तर का हिंदी ज्ञान रखने वाले कर्मियों के लिए कतिपय कार्यालयीन कार्यों हेतु केवल हिंदी का प्रयोग अनिवार्य किया है ?

क) हिंदी में प्रवीणता ख) हिंदी में प्रवीण

ग) हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान घ) इनमें से कोई नहीं

15. संविधान की आठवीं अनुसूची में राजभाषा हिंदी का उल्लेख कौन से क्रम/स्थान में किया गया है ?

क) पहला ख) दूसरा

ग) छठा घ) आठवां

16. राजभाषा संकल्प 1968 के संबंध में संगत कथन का चयन करें–

क) यह संवैधानिक दस्तावेज है।

ख) यह एक विधिक दस्तावेज है।

ग) यह संसद सदस्यों के आम राय को दर्शाता है।

घ) इनमें से कोई नहीं

17. भारत संघ के राज्यों व केंद्र शासित प्रदेशों को राजभाषा की दृष्टि से तीन क्षेत्रों में वर्गीकृत किए जाने का उल्लेख है –

क) राष्ट्रपति के आदेश, 1960

ख) राजभाषा अधिनियम, 1963

ग) राजभाषा संकल्प, 1968

घ) राजभाषा नियम, 1976

18. केन्द्रीय सरकार के कार्यालय द्वारा राजभाषा की दृष्टि से 'ख' क्षेत्र में निवासरत व्यक्ति को प्रेषित पत्रादि की भाषा के संबंध में उपयुक्त विकल्प का चयन करें –

क) उस व्यक्ति की मातृभाषा में

ख) हिंदी में प्रेषित करने पर उसके साथ अंग्रेजी अनुवाद

ग) अंग्रेजी में प्रेषित करने पर उसके साथ हिंदी अनुवाद

घ) हिंदी या अंग्रेजी

19. 'अधिसूचित कार्यालय' से अभिप्रेत है –

क) राष्ट्रपति द्वारा केंद्रीय सरकार के किसी कार्यालय को समस्त सरकारी कामकाज हिंदी में करने हेतु अधिसूचित कर दिया हो।

ख) केंद्रीय सरकार के किसी कार्यालय में कार्यरत अस्सी प्रतिशत कर्मियों द्वारा 'हिन्दी में प्रवीणता' प्राप्त कर लिया गया है।

ग) सक्षम प्राधिकारी द्वारा केंद्रीय सरकार के किसी कार्यालय में कार्यरत पचहत्तार प्रतिशत कर्मियों को हिन्दी में 'प्रवीण' घोषित कर दिया गया है।

घ) केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में कार्यरत अस्सी प्रतिशत कर्मियों द्वारा 'हिंदी का कार्यसाधक' ज्ञान प्राप्त कर लिया गया है।

20. राजभाषा निदेशालय, रेल मंत्रालय (रेलवे बोर्ड) द्वारा हिंदी में प्रकाशित त्रैमासिक गृह पत्रिका का नाम है–

क) राजभाषा संवाद ख) राजभाषा सरिता

ग) रेल राजभाषा घ) राजभाषा दर्पण

21. केंद्रीय कार्यालयों में कार्यरत कोई सरकारी कर्मचारी अपने आवेदन, अपील या अभ्यावेदन किस भाषा में दे सकता है ?

क) हिन्दी या अंग्रेजी में

ख) अंग्रेजी में प्रस्तुत करने पर उसके साथ हिंदी अनुवाद

ग) हिंदी में प्रस्तुत करने पर उसके साथ अंग्रेजी अनुवाद

घ) अपनी मातृभाषा में प्रस्तुत करने पर उसके साथ अंग्रेजी अनुवाद

22. संविधान में उपबंधित भाषाई अल्पसंख्यक वर्गों के हितों की रक्षा के लिए भाषाई अल्पसंख्यक आयुक्त (सीएलएम) की नियुक्ति की जाती है –

क) अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय द्वारा

ख) गृह मंत्रालय द्वारा

ग) राष्ट्रपति द्वारा

घ) प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में गठित एक समिति द्वारा

23. किस अधिनियम/नियम/संकल्प/आदेश के अनुपालन में गृह मंत्रालय द्वारा केंद्रीय कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के प्रसार एवं प्रगामी प्रयोग हेतु 'वार्षिक कार्यक्रम' जारी किया जाता है ?

क) राष्ट्रपति के आदेश, 1960

ख) राजभाषा अधिनियम, 1963

ग) राजभाषा संकल्प, 1968

घ) राजभाषा नियम, 1976

24. केंद्रीय हिंदी समिति के पदेन अध्यक्ष होते हैं–

क) राष्ट्रपति ख) उप राष्ट्रपति

ग) प्रधानमंत्री घ) गृहमंत्री

25. संविधान के अनुच्छेद 120 के अनुसार राज्यसभा का सभापति/लोकसभा का अध्यक्ष किसी संसद सदस्य को किस आधार पर अपनी मातृभाषा में सदन को संबोधित करने की आज्ञा दे सकता है –

क) यदि संसद सदस्य अहिंदी भाषा–भाषी क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करता हो

ख) यदि संसद सदस्य की मातृभाषा आठवीं अनुसूची में सूची बद्ध हो

ग) यदि संसद सदस्य हिंदी या अंग्रेजी में पर्याप्त अभिव्यक्ति नहीं कर सकता हो

घ) इनमें से कोई नहीं

26. केंद्रीय सरकारी कार्यालयों में राजभाषा नियम तथा अधिनियम के उपबंधों के अधीन जारी किए गए निदेशों का अनुपालन सुनिश्चित करने के प्रयोजनार्थ 'उपयुक्त और प्रभावकारी चैक प्वाइंट' बनाने की जिम्मेदारी होती है –

क) सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय

ख) कार्यालय विशेष में पदस्थ राजभाषा अधिकारी

ग) कार्यालय विशेष के प्रशासनिक प्रधान

घ) इनमें से कोई नहीं

27. राजभाषा की दृष्टि से 'ग' क्षेत्र में स्थित किसी रेलवे स्टेशन के नाम में भाषाओं का उचित क्रम होना चाहिए –

क) हिंदी, प्रादेशिक भाषा, अंग्रेजी

ख) प्रादेशक भाषा, हिंदी, अंग्रेजी

ग) हिंदी, अंग्रेजी, प्रादेशिक भाषा

घ) हिंदी तथा अंग्रेजी द्विभाषी में

28. संघ के सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए गृह मंत्रालय के अंतर्गत राजभाषा विभाग की स्थापना कब की गई ?

क) 1960 ख) 1963

ग) 1975 घ) 1987

29. राजभाषा अधिनियम, 1963 में उल्लेखित प्रयोजनों को कार्यान्वित करने के लिए बनाए गए नियमों को कितनी अवधि के लिए संसद के समक्ष, जब वह सत्र में हो, विचारार्थ रखे जाने का प्रावधान किया गया है ?

क) दस दिन ख) चौदह दिन

ग) तीस दिन घ) पैंतालीस दिन

30. 'संपर्क भाषा' के लिए अंग्रेजी में प्रयुक्त सर्वाधिक उचित शब्द है –

क) लिंगुआ मीडिया (Lingua Media)

ख) लिंगुआ फ्रैंका (Lingua Franca)

ग) लिंगुआ इगनोटा (Lingua Ignota)

घ) कॉनटेक्ट लैंगवेज (contact Language)

31. संविधान के किस अनुच्छेद में राजभाषा हिंदी के प्रसार एवं विकास हेतु संघ को निर्देश प्रदान किया गया है ?

क) अनुच्छेद 343 ख) अनुच्छेद 349

ग) अनुच्छेद 350 घ) अनुच्छेद 351

32. यदि किसी उच्च्व न्यायालय का क्षेत्राधिकार दो या दो से अधिक राज्यों में हो तो किस राज्य का राज्यपाल उस उच्च्व न्यायालय की कार्यवाहियों में उस राज्य की राजभाषा / राजभाषाओं का प्रयोग प्राधिकृत कर सकता है ?

क) इस संबंध में राष्ट्रपति राज्यपाल को निर्देशित करता है।

ख) उस राज्य का राज्यपाल जहां उच्च्व न्यायालय का प्रिंसिपल बेंच स्थित है।

ग) सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा के आधार पर राज्य विशेष का राज्यपाल

घ) उच्च्व न्यायालय की कार्यवाहियों में हिंदी या अंग्रेजी के

अलावा किसी भी क्षेत्रीय भाषा के प्रयोग का प्रावधान नहीं है।

33. भारतीय संविधान के प्रस्तावना में उल्लेखित पद समूह 'वी, दी पीपुल ऑफ इंडिया' का प्रामाणिक हिंदी अनुवाद है –

क) हम, भारत के वासी ख) हम, भारत के लोग

ग) हम, भारतीय लोग घ) हम, भारत के जन

34. प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन किया गया था –

क) नई दिल्ली में ख) भोपाल में

ग) जोहान्सवर्ग में घ) नागपुर में

35. केंद्रीय भारतीय भाषा संस्थान का मुख्यालय स्थित है –

क) मैसूर ख) नई दिल्ली ग) आगरा ग) वर्धा

36. भारत के संविधान की अष्टम अनुसूची में कौन सी भाषा समूह शामिल नहीं है ?

क) संथाली एवं नेपाली ख) मैथिली एवं डोगरी

ग) राजस्थानी एवं अंग्रेजी घ) संस्कृत एवं उर्दू

37. मंत्रालयों/विभागों/ कार्यालयों आदि में राजभाषा हिंदी के प्रयोग में हुई प्रगति का जायजा लेने के लिए संसदीय राजभाषा समिति को कितनी उप समितियों में विभाजित किया गया है ?

क) 02 ख) 03 ग) 04 घ) 05

38. संसदीय राजभाषा समिति में अधिकतम सदस्यों की संख्या 30 तक हो सकती है जिसमें से कितने सदस्य क्रमश: राज्यसभा एवं लोकसभा से आनुपातिक प्रतिनिधित्व पद्धति के अनुसार एकल संक्रमणीय मत द्वारा निर्वाचित होते हैं ?

क) 20,10 ख) 10,20 ग) 25,5 घ) 15,15

39. राजभाषा नीति के सर्वोत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर कौन सा पुरस्कार प्रदान किया जाता है ?

क) राजभाषा गौरव पुरस्कार ख) राजभाषा कीर्ति पुरस्कार

ग) राजभाषा यश पुरस्कार घ) राजीव गांधी पुरस्कार

40. राजभाषा वार्षिक कार्यक्रम 2024-25 के अनुसार राजभाषा की दृष्टि से 'क', 'ख' तथा 'ग' क्षेत्रों में स्थित केंद्रीय कार्यालयों के लिए हिंदी टिप्पण का निर्धारित लक्ष्य क्रमश: है–

क) 100%,65%,55% ख) 75%,65%,30%

ग) 75%,50%,30% घ) 65%,55%,45%

41. भारत सरकार की राजभाषा नीति के सम्बन्ध में दिशा-निर्देश देने वाली सर्वोच्च समिति है–

क) केंद्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति

ख) केंद्रीय राजभाषा हिंदी समिति

ग) केंद्रीय हिंदी समिति

घ) संसदीय राजभाषा समिति

42. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति का अध्यक्ष होता है –

क) उस नगर विशेष में स्थित केंद्रीय कार्यालयों में से कोई एक वरिष्ठतम अधिकारी जिन्हें सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा नामित किया जाए

ख) उस नगर विशेष में स्थित सबसे बड़े केंद्रीय कार्यालय के वरिष्ठतम अधिकारी पदेन अध्यक्ष होते हैं।

ग) उस नगर विशेष में स्थित केंद्रीय कार्यालयों में से कोई एक वरिष्ठतम अधिकारी जिन्हें नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की अध्यक्षता का पर्याप्त अनुभव हो।

घ) क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालयों द्वारा प्रेषित 05 वरिष्ठतम अधिकारियों के पैनल में से कोई एक अधिकारी जिन्हें सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा नामित किया जाए।

43. राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा सी डैक, पुणे की सहायता से विकसित सॉफ्टवेयर/टूल 'कंठस्थ' का संबंध है–

क) कृत्रिम बुद्धिमता आधारित हिंदी भाषा प्रशिक्षण से

ख) स्मृति आधारित अनुवाद टूल से

ग) कृत्रिम बुद्धिमता आधारित हिंदी श्रुत लेखन से

घ) गूगल हिंदी अनुवाद टूल से

44. 'हिंदी का कार्यसाधक' ज्ञान प्राप्त करने हेतु केंद्रीय सरकार की हिंदी शिक्षण योजना के अंतर्गत न्यूनतम निर्धारित हिंदी पाठ्यक्रम है –

क) प्रबोध स्तर का ख) प्रवीण स्तर का

ग) प्राज्ञ स्तर का घ) पारंगत स्तर का

45. भारत के अलावा निम्नलिखित में से कौन से देश की आधिकारिक भाषा हिंदी है –

क) मलेशिया ख) मालदीव

ग) फिजी घ) सूरीनाम

46. मुख्य राजभाषा अधिकारी अधिकतम कितनी अवधि के लिए नामित किए जाते हैं–

क) 06 माह के लिए ख) 12 माह के लिए

ग) 18 माह के लिए घ) कोई निश्चित अवधि नहीं

47. रेल मंत्री राजभाषा रजत पदक के अंतर्गत देय पुरस्कार राशि है–

क) ₹10 हजार ख) ₹08 हजार

ग) ₹05 हजार घ) ₹03 हजार

48. क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सचिव होते हैं–

क) अपर महाप्रबंधक

ख) मुख्य राजभाषा अधिकारी

ग) उप मुख्य राजभाषा अधिकारी

घ) वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी

49. भारतीय भाषाओं के माध्यम से हिंदी सीखने के लिए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा विकसित एप्लिकेशन / सॉफ्टवेयर है–

क) मंत्र ख) लीला

ग) खेल–खेल में घ) मंथन

50. रेलों की गृह हिंदी पत्रिकाओं में प्रकाशित मौलिक कविता/ पुस्तक समीक्षा के लिए रचनाकारों को देय मानदेय राशि है

क) एक हजार ख) पांच सौ ग) चार सौ घ) तीन सौ

51. राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा चतुर्थ अखिल राजभाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया–

क) नई दिल्ली ख) पुणे ग) मुंबई घ) वाराणसी

52. राजभाषा विभाग, पमरे, मुख्यालय द्वारा संचालित हिंदी पुस्तकालय एवं वाचनालय का नाम है–

क) सेठ गोकुल दास हिंदी पुस्तकालय एवं वाचनालय

ख) सभुद्रा कुमारी चौहान हिंदी पुस्तकालय एवं वाचनालय

ग) रंगेय राघव हिंदी पुस्तकालय एवं वाचनालय

घ) हरिशंकर परसाई हिंदी पुस्तकालय एवं वाचनालय

53. भारतीय संविधान के अष्टम अनुसूची में शामिल निम्नलिखित में कौन सी भाषा किसी भी राज्य की राजभाषा नहीं है ?

क) राजस्थानी ख) सिंधी ग) कोंकणी घ) अंग्रेजी

54. कंप्यूटरों पर हिंदी में कार्य करने के लिए भारत सरकार द्वारा मानकीकृत की बोर्ड ले आऊट है–

क) रेमिंगटन ख) इंस्क्रिप्ट

ग) फोनेटिक ग) इनमें से सभी

55. पहली बार आधिकारिक रूप से राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी दिवस मनाया गया –

क) 1949 ख) 1953 ग) 1960 घ) 1963

56. विभागीय परीक्षाओं में कितने प्रतिशत अंको का प्रश्न राजभाषा नियम, अधिनियम से संबंधित पूछे जाने अनिवार्य है ?

क) कुल अंकों का 5% ख) कुल अंकों का 10%

ग) कुल अंकों का 15% घ) कुल अंकों का 20%

57. देवनागरी लिपि के मानकीकरण के लिए कौन सी संस्था प्राधिकृत है ?

क) नागरी लिपि परिषद्

ख) केंद्रीय भारतीय भाषा संस्थान

ग) केंद्रीय सचिवालय हिंदी परिषद्

घ) केंद्रीय हिंदी निदेशालय

58. निम्नलिखित में कौन सा प्रलेख केंद्रीय सरकार के कर्मी द्वारा हिंदी या अंग्रेजी में प्रस्तुत किया जा सकता है लेकिन उस कर्मी से उक्त का यथास्थिति अंग्रेजी या हिंदी अनुवाद प्रस्तुत करने की अपेक्षा नहीं की जा सकती है ?

क) टिप्पणी तथा कार्यवृत्त

ख) प्रेस विज्ञप्ति तथा प्रशासनिक रिपोर्ट

ग) सामान्य आदेश तथा अधिसूचनाएं

घ) इनमें से कोई नहीं

59. राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3 (3) में सूचीबद्ध दस्तावेजों को हिंदी के अतिरिक्त अंग्रेजी भाषा में जारी किए जाने की अनिवार्यता समाप्त की जा सकती है बशर्ते कि

क) संसदीय राजभाषा समिति की सिफारिश पर राष्ट्रपति द्वारा इस आशय का एक निर्देश जारी किया जाए।

ख) राजभाषा के रूप में हिंदी नहीं अपनाने वाले राज्यों के विधान मंडलों द्वारा इस आशय का संकल्प पारित कर आग्रह किए जाने एवं संसद के दोनों सदनों द्वारा ऐसा संकल्प पारित किए

जाने पर

ग) अहिंदी भाषा-भाषी राज्यों के विधान मंडलों द्वारा इस आशय का संकल्प पारित कर आग्रह किए जाने पर राष्ट्रपति के आदेश द्वारा

घ) इस हेतु प्रस्तुत प्रस्ताव को संसद के दोनों सदनों द्वारा बहुमत से पारित कर दिया जाए।

60. किसी नगर में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के गठन हेतु उस नगर विशेष में केंद्रीय सरकार के कार्यालयों की न्यूनतम संख्या होनी चाहिए-

क) 7 या 7 से अधिक ख) 8 या 8 से अधिक

ग) 10 या 10 से अधिक घ) 25 या 25 से अधिक

61. वर्तमान में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के सचिव हैं -

क) डॉ. (श्रीमती) मीनाक्षी जौली

ख) श्रीमती अंशुली आर्या

ग) डॉ. बरूण कुमार

घ) श्रीमती अनुराधा मित्रा

62. राजभाषा विभाग का अंग्रेजी भाषा में आधिकारिक पयार्य है-

क) डिपार्टमेंट ऑफ हिंदी लैंगवेज

ख) ऑफिशियल हिंदी लैंगवेज डिपार्टमेंट

ग) डिपार्टमेंट ऑफ ऑफिशियल लैंगवेज

घ) डिपार्टमेंट ऑफ हिंदी इंगलिश लैंगवेज

63. रेलों पर मुख्य राजभाषा अधिकारी नामित किए जाते हैं -

क) महाप्रबंधक द्वारा वरिष्ठता के आधार पर प्रमुख विभागाध्यक्षों के पैनल में से

ख) महाप्रबंधक की अनुशंसा पर राजभाषा निदेशालय, रेलवे बोर्ड द्वारा

ग) हिंदी की सर्वाधिक योग्यता रखने वाले प्रमुख विभागाध्यक्ष को महाप्रबंधक द्वारा

घ) महाप्रबंधक की अनुशंसा पर सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा

64. 2011 की जनगणना के अनुसार हिन्दी के बाद सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है-

क) बंगाली ख) मराठी ग) तेलगू घ) तमिल

65. रेल यात्रा वृत्तांत योजना के अंतर्गत रेलवे बोर्ड द्वारा पुरस्कार हेतु प्रविष्टियां आमंत्रित की जाती है-

क) केवल सेवारत रेलकर्मियों से

ख) सेवारत तथा सेवानिवृत्त रेलकर्मियों से

ग) केंद्रीय एवं राज्य कार्यालयों में कार्यरत कर्मियों से

घ) भारतीय नागरिकों से

66. 2024-25 के राजभाषा वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार 'क' क्षेत्र में स्थित केंद्रीय कार्यालयों से 'ग' क्षेत्र में स्थित केंद्रीय कार्यालयों को हिंदी में मूल पत्राचार का निर्धारित प्रतिशत है-

क) 55 प्रतिशत ख) 65 प्रतिशत

ग) 95 प्रतिशत घ) 100 प्रतिशत

67. वर्तमान में संसदीय राजभाषा समिति के अध्यक्ष हैं-

क) श्रीमती द्रोपदी मुर्मु ख) श्री जगदीप धनखड़

ग) श्री अमित शाह घ) श्री भर्तृहरि महताब

68. विश्व हिंदी सचिवालय का मुख्यालय स्थित है-

क) मॉरीशस ख) मालदीव

ग) फिजी घ) सूरीनाम

69. अंग्रेजी में प्रयुक्त 'डिग्लॉट' (Diglot) शब्द का आशय है-

क) किसी प्रलेख को हिंदी एवं अंग्रेजी में जारी करना

ख) किसी प्रलेख को द्विभाषी रूप में जारी करना

ग) किसी प्रलेख को त्रिभाषी रूप में जारी करना

घ) किसी प्रलेख को बहुभाषी रूप में जारी करना

70. प्रथम भारतीय विदेश मंत्री जिन्होंने संयुक्त राष्ट्र संघ की महासभा को हिंदी में संबोधित किया -

क) सुषमा स्वराज ख) श्याम नंदन प्रसाद मिश्र

ग) विश्वनाथ प्रसाद सिंह घ) अटल बिहारी वाजपेयी

71. राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा विकसित पूर्णतया डिजिटल वेब आधारित बृहद हिंदी-अंग्रेजी शब्दकोश का नाम है -

क) हिंदी अंग्रेजी महाकोश

ख) हिंदी अंग्रेजी अमृत भारत महाकोश

ग) हिंदी शब्द सिंधु

घ) अटल हिंदी शब्दकोश

72. 'राजभाषा पखवाड़ा' शब्द समूह में 'पखवाड़ा' का शाब्दिक अर्थ होता है-

क) एक सप्ताह की अवधि

ख) पंद्रह दिवस की अवधि
ग) पंद्रह कार्य दिवस की अवधि
घ) चौदह कार्य दिवस की अवधि

73. हिंदी शिक्षण योजना के अंतर्गत वर्तमान में निम्नलिखित में कौन सा पाठ्यक्रम उत्तीर्ण करने पर राजपत्रित /अराजपत्रित कर्मियों के लिए वैयक्तिक वेतन का प्रावधान नहीं है–
क) प्राज्ञ ख) प्रवीण ग) प्रबोध घ) पारंगत

74. संविधान के भाग 17 में संघ की राजभाषा संबंधी प्रावधानों का उल्लेख कुल कितने अनुच्छेदों में किया गया है –
क) 12 ख) 11 ग) 10 घ) 9

75. यूनिकोड पद्धति के तहत किसी भी लिपि के वर्णमाला के अक्षरों / अंकों / चिह्नों / ध्वनियों के लिए कितने अंकों का यूनिक कोड प्रदान किया जाता है ?
क) 04 ख) 06 ग) 08 घ) 10

हंसता चेहरा खिलता फूल।
हिंदी भाषा राष्ट्र अनुकूल।।

बिपुल कुमार मंडल
वरिष्ठ अनुवादक
मुख्यालय/जबलपुर,पमरे
मो. 9039380697

उत्तर पत्रक

1.	(ग)	26.	(ग)	51.	(क)
2.	(क)	27.	(ख)	52.	(घ)
3.	(ख)	28.	(ग)	53.	(ख)
4.	(ख)	29.	(ग)	54.	(ख)
5.	(ग)	30.	(ख)	55.	(ख)
6.	(ग)	31.	(घ)	56.	(ख)
7.	(क)	32.	(ख)	57.	(घ)
8.	(ग)	33.	(ख)	58.	(क)
9.	(क)	34.	(घ)	59.	(ख)
10.	(ग)	35.	(क)	60.	(ग)
11.	(ख)	36.	(ग)	61.	(ख)
12.	(क)	37.	(ख)	62.	(ग)
13.	(ग)	38.	(ख)	63.	(ख)
14.	(क)	39.	(ख)	64.	(क)
15.	(ग)	40.	(ग)	65.	(घ)
16.	(ग)	41.	(ग)	66.	(ख)
17.	(घ)	42.	(क)	67.	(ग)
18.	(घ)	43.	(ख)	68.	(क)
19.	(घ)	44.	(ग)	69.	(ख)
20.	(ग)	45.	(ग)	70.	(घ)
21.	(क)	46.	(ख)	71.	(ग)
22.	(ग)	47.	(ख)	72.	(ख)
23.	(ग)	48.	(घ)	73.	(घ)
24.	(ग)	49.	(ख)	74.	(घ)
25.	(ग)	50.	(ग)	75.	(क)

छायाचित्र - वीथिका

76वां गणतत्र दिवस समारोह

झंडा फहराते हुए श्रीमती शोभना बंदोपाध्याय,
महाप्रबंधक, पश्चिम मध्य रेलवे

गणतंत्र दिवस के अवसर पर उद्‌बोधन देती हुईं, श्रीमती शोभना बंदोपाध्याय
महाप्रबंधक, पश्चिम मध्य रेलवे

रेल सुरक्षा बल टुकड़ी का अवलोकन करती हुईं
महाप्रबंधक, पश्चिम मध्य रेलवे

रेल सुरक्षा बल टुकड़ी से सलाम लेती हुईं
महाप्रबंधक, पश्चिम मध्य रेलवे

76वें गणतंत्र दिवस समारोह के अवसर पर सांस्कृतिक अकादमी के
कलाकार एवं स्कूली बच्चों के साथ महाप्रबंधक महोदया।

गणतंत्र दिवस समारोह के अवसर पर गुब्बारे छोड़ती हुईं, महाप्रबंधक महोदया
पमरे, म. कर्म. क. संगठन की पदाधिकारीगण एवं उपस्थित अन्य अधिकारीगण

छायाचित्र - वीथिका

क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 67वीं बैठक का आयोजन

समिति अध्यक्ष एवं अपर महाप्रबंधक, पमरे श्री एकनाथ मोहकर का पौधा भेट कर स्वागत करते हुए श्री मनोज कुमार गुप्ता, मुराधि एवं प्र. मु. सा. प्रबंधक, पमरे

क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 67वीं तिमाही बैठक की अध्यक्षता करते हुए श्री एकनाथ मोहकर, अपर महाप्रबंधक, पमरे

बैठक के दौरान राजभाषा विभाग, मुख्यालय की त्रैमासिक गृह पत्रिका 'राजभाषा सरिता' के 51 वें अंक का विमोचन करते हुए, श्री एकनाथ मोहकर, समिति अध्यक्ष एवं अपर महाप्रबंधक, पमरे, श्री मनोज कुमार गुप्ता, मुराधि एवं उपस्थित समिति सदस्य अधिकारीगण।

मंडलों एवं कारखानों के ऑनलाइन जुड़े समिति सदस्यों से चर्चा करते हुए श्री एकनाथ मोहकर, अपर महाप्रबंधक, पमरे

क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 67वीं तिमाही बैठक में उपस्थित समिति सदस्य एवं अन्य प्रतिनिधि अधिकारीगण

छायाचित्र - वीथिका

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 15वीं बैठक का आयोजन

नराकास कार्यालय क्र. 02 की 15 वीं बैठक में दीप प्रज्जवलित कर बैठक का शुभारंभ करते हुए श्री एकनाथ मोहकर समिति अध्यक्ष एवं अपर महाप्रबंधक, पमरे

नराकास कार्यालय क्र. 02 की 15 वीं बैठक की अध्यक्षता करते हुए समिति अध्यक्ष एवं अपर महाप्रबंधक, पमरे

नराकास कार्यालय क्र. 02 की 15 वीं बैठक में स्वागत भाषण देते हुए श्री मनोज कुमार गुप्ता, मुराधि, पमरे

नराकास कार्यालय क्र. 02 की 15 वीं बैठक में अध्यक्षीय उद्बोधन देते हुए श्री एकनाथ मोहकर, समिति अध्यक्ष एवं अपर महाप्रबंधक, पमरे

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति कार्यालय क्र. 02 जबलपुर की 15 वीं बैठक में उपस्थित समिति सदस्य एवं कार्यालय प्रमुख तथा अन्य प्रतिनिधि अधिकारीगण

छायाचित्र - वीथिका

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 15वीं बैठक का आयोजन

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति कार्यालय क्र. 02 की वार्षिक राजभाषा पत्रिका 'सरल' के 05 वें अंक का विमोचन करते हुए समिति अध्यक्ष एवं अपर महाप्रबंधक श्री एकनाथ मोहकर, श्री मनोज कुमार गुप्ता, मुराधि, पमरे, समिति सदस्य एवं कार्यालय प्रमुख तथा अन्य अधिकारीगण

सदस्य कार्यालयों को नगर राजभाषा शील्ड प्रदान करते हुए श्री एकनाथ मोहकर, समिति अध्यक्ष एवं अपर महाप्रबंधक, पश्चिम मध्य रेलवे

सदस्य कार्यालयों को नगर राजभाषा ट्रॉफी प्रदान करते हुए श्री एकनाथ मोहकर, समिति अध्यक्ष एवं अपर महाप्रबंधक, पश्चिम मध्य रेलवे

छायाचित्र - वीथिका

विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर विभिन्न प्रतियोगिता का आयोजन

विश्व हिंदी दिवस 2025 के दौरान आयोजित 'शुद्ध हिंदी लेखन प्रतियोगिता' में उपस्थित राजभाषा अधिकारी, मुख्यालय एवं प्रतिभागीगण

विश्व हिंदी दिवस 2025 के दौरान आयोजित 'हिंदी अनुवाद प्रतियोगिता' में उपस्थित राजभाषा अधिकारी, मुख्यालय एवं प्रतिभागीगण

विश्व हिंदी दिवस 2025 के दौरान आयोजित 'राजभाषा वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता' में उपस्थित राजभाषा अधिकारी, मुख्यालय एवं प्रतिभागीगण

छायाचित्र - वीथिका

विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर काव्य संगोष्ठी एवं हिंदी कार्यशाला का आयोजन

विश्व हिंदी दिवस 2025 के अवसर पर माल्यार्पण एवं पुष्प अर्पित कर कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए श्री मनोज कुमार गुप्ता, मुराधि, पमरे

'काव्य संगोष्ठी एवं राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह' की अध्यक्षता करते हुए श्री मनोज कुमार गुप्ता, मुख्य राजभाषा अधिकारी, पमरे

विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर कविता पाठ करते हुए, आमंत्रित कविगण

भंडार विभाग, मुख्यालय हेतु आयोजित दो दिवसीय हिंदी कार्यशाला का शुभारंभ करते हुए श्री मनोज कुमार गुप्ता, मुराधि, पमरे

हिंदी कार्यशाला के समापन अवसर पर सहभागिता प्रमाण-पत्र प्रदान करते हुए श्री मनोज कुमार गुप्ता, मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं प्र.मु.सा.प्रबंधक, पमरे

राजभाषा मार्गदर्शिका - 2025 का विमोचन करते हुए
श्रीमती शोभना बंदोपाध्याय, महाप्रबंधक, पमरे एवं
श्री मनोज कुमार गुप्ता, मुराधि एवं प्र.मु.सा. प्र., पमरे

महाप्रबंधक कार्यालय, पश्चिम मध्य रेल, जबलपुर

महाप्रबंधक कार्यालय, पश्चिम मध्य रेल, जबलपुर

Designed & Printed by - Up To Date Print Media, Jabalpur. Mob-7470587143,E-mail-up2date.print@gmail.com